अहिंसा, आगम और विज्ञान से आलोकित श्रेष्ठतम पत्रिका

भाव विज्ञान

BHAV VIGYAN

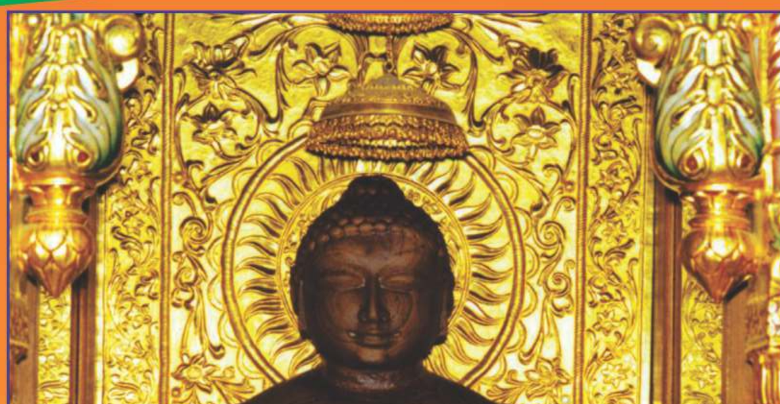

वीर निर्वाण संवत् - 2542
चैत्र कृष्ण पक्ष, वि.सं. 2072, मार्च 2016

वर्ष : नौ
अंक : पैंतीस

मूल्य : 10/-

परतापुर (राजस्थान) में प्रवचन देते हुए
आचार्यश्री आर्जवसागरजी महाराज।

प्रथम आचार्य पदारोहण दिवस पर पाद प्रक्षालन
करते हुए हर्षदभाई एवं अरविंदभाई, सूरत।

आचार्य पदारोहण दिवस पर आचार्यश्री आर्जवसागरजी महाराज की पूजा करते हुए
खान्दू कॉलोनी बांसवाड़ा के भक्तगण।

आचार्यश्री को शास्त्र भेंट करते हुए आहुरानगर,
सूरत की महिलाएँ।

अतिशय क्षेत्र बनेड़ियाजी में, आचार्यश्री आर्जवसागरजी
महाराज एवं भक्तगण।

अ.क्षे. मक्सीजी मेले के अवसर पर आचार्यश्री आर्जवसागरजी के प्रवचन लाभ लेता हुए जनसमूह।

आशीर्वाद व प्रेरणा
संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज
से दीक्षित
आचार्यश्री १०८ आर्जवसागर जी महाराज।

रजिस्ट्रेशन क्रं. **MPHIN/2007/27127**

त्रैमासिक
भाव विज्ञान
(BHAV VIGYAN)

वर्ष-आठ
अंक - चौतीस

● *परामर्शदाता* ●
पंडित मूलचंद लुहाड़िया
किशनगढ़ (राजस्थान) मोबा.: 9352088800
● *सम्पादक* ●
श्रीपाल जैन 'दिवा'
शाकाहार सदन, एल.आई.जी.-75, केशर कुंज, हर्षवर्धन नगर, भोपाल-462003 (म.प्र.) फोन : 4221458
● *प्रबंध सम्पादक* ●
डॉ. सुधीर जैन, प्राध्यापक
85, डी.के. काटेज, ई-8 एक्सटेंशन, अरेरा कालोनी, भोपाल मो. 9425011357
● *सम्पादक मंडल* ●
पं. जय कुमार 'निशांत', टीकमगढ़ (म.प्र.)
डॉ. अजित कुमार जैन, भोपाल (म.प्र.)
डॉ. संजय जैन, पथरिया, दमोह (म.प्र.)
डॉ. श्रीमती अल्पना जैन (मोदी), ग्वालियर (म.प्र.)
इंजी. महेन्द्र कुमार जैन, भोपाल (म.प्र.)
श्री सुनील वेजीटेरियन, दमोह (म.प्र.)
● *कविता संकलन* ●
पं. लालचंद जैन 'राकेश', भोपाल
● *प्रकाशक* ●
श्रीमती सुषमा जैन धर्मपत्नी डॉ. अजित जैन
MIG-8/4, गीतांजली काम्प्लैक्स, कोटरा, भोपाल
फोन : 0755-4902433, 9425601161
email : bhav.vigyan@yahoo.co.in

● *आजीवन सदस्यता शुल्क* ●

पुण्यार्जक विशेषांक संरक्षक	:	24,500
परम संरक्षक	:	21,000
पुण्यार्जक संरक्षक	:	18,000
सम्मानीय संरक्षक	:	11,000
संरक्षक	:	5,100
विशेष सदस्य	:	3100
आजीवन सदस्य	:	1100

कृपया सदस्यता शुल्क प्रकाशक के एवं रचनाएँ प्रबंध सम्पादक के पते पर भेजें।

पल्लव दर्शिका

विषय वस्तु एवं लेखक		पृष्ठ
1. प्रवचन प्रमेय	- आचार्यश्री विद्यासागर जी महाराज	2
2. ध्यान के योग्य भाव	- आचार्यश्री आर्जवसागरजी	7
3. सत्पथ-दर्पण	- स्व.पं. अजित कुमार शास्त्री	10
4. मोक्षार्थियों को सौगात	- पं. अखिलेश शास्त्री 'रमगढ़ा'	16
5. गणितसार संग्रह	- अनुवादक : प्रो. एल.सी. जैन	18
6. पारसचन्द से बने आर्जवसागर	- आर्यिकारत्न श्री प्रतिभामति माताजी	20
7. गरिमापूर्ण हैं हमारे आचार्य परमेष्ठी	- मुनिश्री 108 नमितसागरजी	25
8. इष्टोपदेश	- आचार्यश्री आर्जवसागरजी	28
9. हम कितने शाकाहारी	- संकलन	31
10. आचार्यश्री सीमंधरसागर संस्तुति	- आचार्यश्री आर्जवसागर संघ	34
11. जग से पार उतरना है	- आचार्यश्री आर्जवसागरजी	36
12. छोटी-छोटी स्वतंत्रता की चाह	- श्वेता पापड़ीवाल	37
13. समाचार		38
14. प्रश्नोत्तरी		40

लेखक एवं विचारों से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।
भाव विज्ञान से संबंधित समस्त निर्णयों/न्यायों के लिए न्याय क्षेत्र भोपाल ही मान्य होगा।

ॐ नमः सिद्धेभ्यः ॐ नमः सिद्धेभ्यः ॐ नमः सिद्धेभ्यः

प्रवचन प्रमेय

-आचार्यश्री विद्यासागर जी महाराज

सन्मति को मन नमन हो मम मति सन्मति होय।
सुर-नर-पशु-गति सब मिटें, गति पंचम गति होय॥
कुन्दकुन्द को नित नमूं, हृदय कुन्द खिल जाय।
परम सुगन्धित महक में, जीवन मम घुल जाय॥ (मंगलाचरण 1-4)

यह पंचकल्याणक महोत्सव का अवसर आप लोगों को उपलब्ध हुआ है। जनता ने आग्रह किया था, प्रार्थना की; कि आप भी यहाँ पर आयें-पधारें। हमने कहा- देखो! जैसा अभी पण्डित जी ने कहा- महाराज जी कुछ कहते नहीं। मैं तो वह कहता हूँ जो आत्मा की बात होती है। आत्मा का स्वभाव देखना जानना है। इसलिए क्या होता है? आपको भी देखना है। लेकिन आप कुछ होने से पहले ही देख लेना चाहते हैं, जो सम्भव नहीं है।

वस्तु का परिणमन जिस समय, जिस रूप में होता है, उसी को देखा जा सकता है और उसी का अनुभव किया जा सकता है। रागी, द्वेषी, कषायी, व्यसनी व्यक्ति परिणमन तो कर रहा है किन्तु वह उसका जानना-देखना छोड़कर भविष्य की लालसा में पड़ जाता है, संसार की यही रीति है। यही रीति आप लोगों को पसंद आती है इसलिये संसार में हैं। जिस दिन वस्तु का वर्तमान परिणमन हमारा ध्येय बन जाये, पेय बन जाये, ज्ञेय बन जाए उस दिन संसार में हमारे लिये कोई भी वस्तु अभीष्ट नहीं रह जायेगी। हमने यही कहा, अभी भी वही कहूँगा और आगे के लिए क्या कह सकता हूँ- पता नहीं? जब कभी भी पूछा जाए, यही कहता हूँ नहीं भी पूछे तो भी मैं यही कहना चाहता हूँ कि देखना-जानना अपना स्वभाव है तो उसे हम भूले ना।

ऊपर के मंगलाचरण में आचार्य कुछकुन्द देव को नमोऽस्तु किया गया और प्रार्थना की; कि हे भगवन्! जिस प्रकार आपका जीवन निष्पन्न-सम्पन्न हुआ, उसी प्रकार हमारा भी जीवन सम्पन्न हो। हमारा भी जीवन प्रतिपन्न हो। हम अभ्युत्पन्न-मति वाले हों। हमारे पास मति तो है, लेकिन वह मति चौरासी लाख योनियों में भटकने-भटकाने वाली है। उसको हम भूल जायें और आप जैसे बन जायें, बस और कोई इच्छा नहीं।

मोक्षमार्ग इतना बड़ा नहीं है, जितना हमने समझ रक्खा है। हम सोचते हैं कि अनन्तकाल से परिचय में आने पर भी यह अधूरा-सा ही लगता है, कभी भी पूरा नहीं, अतः मोक्षमार्ग बहुत बड़ा है। लेकिन मोक्षमार्ग बहुत अल्प-स्वल्प है। कल्पकाल से आ रहे दुःख की शान्ति में परिवर्तित कराने की क्षमता इसमें है। मोक्षमार्ग बहुत प्रयास करने पर प्राप्त होता है ऐसा भी नहीं है। यह तो बहुत शान्ति का मार्ग है। जैसे- एक भवन निर्माण कराना था। देश-विदेशों से इन्जिनियरों को बुलवाया गया। उन्होंने नक्शा आदि तैयार कर दस साल तक परिश्रम किया और दस-बीस लाख रुपये खर्च कर, उसे तैयार भी कर दिया। लेकिन वह पसंद नहीं आया। अब तो यही समझ में आता है कि जिस प्रकार तैयार होने में दस साल और लाखों रुपये लगे हैं, वैसे ही इसे साफ करने में ओर लगेंगे। इन्जीनियरों से पूँछा गया- हमें यह पसन्द नहीं है। इसके निर्माण में तो दस साल लग गये तो क्या इसको गिराने में भी इतना ही समय लगेगा? उन्होंने कहा- नहीं! निर्माण के लिए बहुत समय लगता है, नाश के लिये

नहीं। इसी प्रकार ''कर्मक्षय के लिये इतने प्रयास जंजाल और उलझनों की कोई आवश्यकता नहीं।'' आपने जीवन में बहुत कुछ कमाया है, जमाया है, अर्जित किया है व उसको बांध-बूंधकर रखा है, लेकिन अब उसे छोड़ने के लिए लम्बे समय की आवश्यकता नहीं। इतना ही आवश्यक है कि अपनी खुली आँखों को इन पदार्थों की तरफ से मोड़ लें। ''दृष्टि नाशा पै धरे'' बन्द भी नहीं करना है। मात्र अपनी आँखों के बीच में एक ''ऐंगिल'' बन जाए- कोण बन जाए तो हमारा दृष्टिकोण भीतर की ओर आ जाएगा, यही पर्याप्त है। वहीं के वहीं परिवर्तन हो जाएगा। सब वस्तुएं वहीं धरी रहेंगी। सागर, सागर में है; जयपुर जयपुर में है। जयपुर वाले यहाँ पर तभी तक हैं जब तक कि उनका दृष्टिकोण उधर है- सम्बन्ध जोड़ रखा है। लेकिन न जयपुर आपका है ना हमारा। न सागर आपका है, ना किसी अन्य का। सागर, सागर में है। भवसागर, भवसागर में है। हम तो उसे तैर रहे हैं। **बस! आप सागर में रहते हैं और हम सागर पर रहते हैं, इतना ही अन्तर है।**

बन्धुओं! सागर पर कहने वाला, भवसागर में रहने वाला नहीं होता। यह संसारी प्राणी नहीं हुआ करता। वह तो मुमुक्षु हुआ करता है। चाहने वाले मोही का नाम मुमुक्षु नहीं हुआ करता। ''मोक्तुमिच्छुः मुमुक्षुः'' मुमुक्षु शब्द की व्युत्पत्ति ही कहती है कि वह जोड़ता नहीं, छोड़ने की इच्छा करता है। लेकिन संसारी प्राणी जोड़न की इच्छा करता है। भैया! आप क्या चाहते हैं, जोड़ना या छोड़ना? जोड़ना चाहते हैं, इसीलिए मैं कहता हूँ- भैया! मुमुक्षु की कोटि में नहीं आ सकते। पण्डित जी अभी बोल रहे थे कि क्या छोड़ें? जो जोड़ा है, उसे ही छोड़ना है। जिसके साथ हमारी लगन है, प्यार है। जिसको हमने अपनी तरफ से इंगित किया, प्रयास के साथ अर्जित किया, उसे ही छोड़ना है। लेकिन लगता है यदि भगवान भी कह दें तो छोड़ना आप लोगों को सम्भव नहीं हो सकेगा। भगवान कह भी तो रहे हैं- ''कि तुम्हें वही छोड़ना है, जो जोड़ा है। मैंने जो जोड़ा है, वह नहीं। पूर्वावस्था में मैंने भी जो जोड़ा था उसे छोड़ दिया। लेकिन अब जो यह जुड़ गया है वह अब जीवन का अंग/हिस्सा बन गया है। जीवन का स्वभाव धर्म है। धर्म को कभी नहीं छोड़ना है। फिर क्या छोड़ना है? छोड़ना वही है, जो आपने जोड़ा है। मुझे यह नहीं पता कि आपने क्या-क्या जोड़ रखा है। भगवान का कहना तो इतना ही है कि, जो जोड़ रखा है, जोड़ते जा रहे हो और जो जोड़ने का संकल्प ले लिया है- भविष्य का जीवन जीने के लिये जो तैयारी करने का प्रयास चल रहा है, बस! उसको ही छोड़ना है। फिर सारा का सारा भविष्य ही अन्धकारमय नहीं हो जाएगा? अन्धकार नहीं होगा। यह जो ''आर्टीफिशियल लाइट'' है उससे आँखों पर चमक आ रही है। इसको फेंक दीजिए।

वर्तमान में जितना भी प्रकाश है, वह आँखों को खराब करता है। अतः इस प्रकाश को छोड़ दीजिए। यह प्रकाश, प्रकाश नहीं है। **प्रकाश तो वह है, जिसमें कोई भी वस्तु अन्धकारमय नहीं रहे। कोई भी पदार्थ ज्ञातव्य नहीं रहे।** वह प्रकाश लाइये। बाहर से ''स्टोर'' किया गया प्रकाश हमारे काम का नहीं। वह अन्धकार के सामने शोर करता है और उसे भगा देता है। लेकिन भगाने वाला प्रकाश, प्रकाश नहीं हो सकता। ''प्रकाश तो अपने-आप में सबको लीन कर लेता है, चाहे वह अन्धकार ही क्यों न हो।'' समन्तभद्र स्वामी ने स्वयंभूस्तोत्र में कहा-

दीपस्तमः पुद्गलभावतोऽस्ति

दीपक का प्रकाश तम को कभी भगाता नहीं, किन्तु तम को ही प्रकाशमय बना देता है। वस्तु का एक स्वभाव-गुण, प्रकाशमय होना भी है तो दूसरा विभाव अन्धकारमय होना। हमारा ज्ञान एक ही है; वही ज्ञान, अज्ञान हुआ है, अब उसे ही ज्ञान की ओर ''डायवर्ट'' करना है। और कोई क्रिया नहीं, वहीं के वहीं सब कुछ हो जाएगा। कहीं भागना नहीं, कहीं जाना नहीं। किन्तु जो जोड़ने का भाव है, जिसके साथ जुड़न चल रहा है, उसको जानना है, पहचानना है। यह कोई उलझन की बात नहीं। बहुत सीधी-सादी बात है। **मुमुक्षु के जुड़ नहीं रहा, जोड़ नहीं रहा, उसे छोड़ने की इच्छा कर रहा है। छोड़ने की इच्छा, इच्छा नहीं है। वह छोड़ेगा, और ऐसे छोड़ेगा कि बस यूँ आँख फेर लेगा। अरे! आँख क्या फेरेगा, उसमें भी तो गरदन को व्यायाम करने की आवश्यकता है लेकिन वह तो वहीं के वहीं, वैसा या वैसे ही स्वस्थ हो जाएगा।** अब आप भले ही पूछने लग जाए कि- क्या बात हो गयी, ऐसी कौन-सी उपेक्षा आ गई। उसके लिये तो अब उपेक्षा नहीं, मात्र किसी से भी अपेक्षा नहीं है, इतना ही है। दुनिया की दृष्टि में वह नटखट-सा लगने लगता है। जब हमारा पेट भरा हो तक किसी की आवश्यकता नहीं- अपेक्षा नहीं। आप मेहमान के यहाँ गये हैं। आपके सामने बहुत से व्यंजनों से शोभित थाली परोस दी गई और पूछा जाता है कि आपको क्या दें? क्या चाहिए?...... बस! इतना ही चाहिये कि अब अधिक मत पूछिए। क्योंकि हमारा पेट भरा है साथ ही पेट, पेट ही है नगरपालिका का कचराघर नहीं। आपने जो अनेक प्रकार के व्यंजन बना रखे हैं, उन्हें इसमें डालें, ऐसा नहीं हो सकता। भरपेट होने पर कोई इच्छा नहीं। इच्छा बताने की आवश्यकता ही नहीं। क्या आपको इतना भी ज्ञान नहीं है कि- जहाँ पर अपेक्षा है, वहाँ पूंछतांछ होती है। जहाँ पर अपेक्षा नहीं वहाँ उपेक्षा हो गई। इन शब्दों की व्युत्पत्ति यूँ कहना चाहूँगा-

''अपगतं ईक्षणं यस्य सा इति अपेक्षा''

अर्थात् जिसके जानने-देखने की समीचीन दृष्टि ही समाप्तप्राप्य: है- हो चुकी है उसका नाम अपेक्षा है। और **''ईक्षणस्य समीपं इति उपेक्षा''** अर्थात् बिलकुल निकट से देख रहा है। बहुत निकट आ चुका है इसलिए दूसरे पदार्थों की अपेक्षा नहीं, उसी का नाम उपेक्षा है। समन्तभद्राचार्य ने स्वयंभूस्तोत्र में अरनाथ भगवान् की स्तुति करते हुए कहा है-

''दृष्टिसम्पदुपेक्षास्त्रैस्त्वया धीर! पराजित:''

सम्यग्दर्शन- देखना, सम्पत्- आत्मा की सम्पदा ज्ञानधन। समन्तभद्राचार्य ने रत्नत्रय की विभिन्न स्थानों पर भिन्न-भिन्न शब्दों से बात कही है, सम्पद्-वीतराग विज्ञान। ज्ञान नहीं, किन्तु वीतरागविज्ञान। चारित्र के लिए भी उन्होंने ऐसा शब्द चुना जिसे दुनिया ''उपेक्षा'' की दृष्टि से देखती है, रागद्वेष की दृष्टि से देखती है। चारित्र के लिये ''उपेक्षा'' भी बोलते हैं। जिसके पास आना किसी को इष्ट नहीं। दूर जाना तो बहुत इष्ट-सरल है। समझने के लिए- कोई व्यक्ति निर्धन था, अब उसे कुछ धन मिल गया तो उसमें गति आ गई। पहले गति तो थी लेकिन पैरो में थी। पैरों से पैदल चलता था। अब भी पैरों में ही गति है, लेकिन अब पैडल चला रहा है। साइकल पर बैठ गया है। गति हो गई, प्रगति हो गई, किन्तु अभी रास्ते पर चल रहा है। जब विशेषरूप से धन कमाता है तो मोटरसाइकल ले आता है। पहले ''बाइसिकल'' थी अब ''मोटरसाइकल'' आ गई। यदि और धन आ जाता है तो उसमें गति और तेज हो जाती है। गति तो तेज होती है पर आत्मा को छोड़कर, केन्द्र को

छोड़कर, बाहर की ओर होती है। आत्मा को बहिरात्मा बना देता है धन। जिससे भागने लगाता है। तेज चलने से ''एक्सीडेन्ट'' हो सकता है। धन की वृद्धि से वह अब मोटरसाइकल से कार पर आ जाता है। इससे आगे कार से भी उठने लगता है। कार भी बेकार लगने लगती है तो प्लेन का बात आ जाती है। जैसे-जैसे धन बढ़ता गया, वैसे वैसे विकास तो होता गया, लेकिन धर्म को नहीं समझ पाया, जो इसकी निजी सम्पदा है। इस प्रकार धन के विकास में संसारी प्राणी अपनी सम्पदा-ज्ञान का दुरुपयोग भी करता जा रहा है।

कल्पना करिये, जो पैदल यात्रा करता है, यदि वह गिर जाता है तो क्या होता है? थोड़ी-बहुत चोट लग जाती है। फिर उठ जाएगा और चलने लग जायेगा। यदि साइकल से गिर जाए तो? थोड़ी ज्यादा चोट लग सकती है। यदि मोटर साइकल से गिरे तो? उसे उठाकर अस्पताल लाना होगा। यदि कार से दुर्घटना हो जाए तो? गंभीर समस्या हो जाती है। और यदि प्लेन से यात्रा करते हुए ''एक्सीडेन्ट'' हो जाता है तो? वह इस गति से ही चला जाता है। दिवंगत हो जाता है। स्वतः ही राख हो जाता है उसके मृत शरीर का दाह संस्कार करने की भी कोई आवश्यकता नहीं पड़ती।

बन्धुओ! धन असुरक्षित करता है और धर्म सुरक्षित। समन्तभद्रस्वामी ने कहा- भगवन् कामवासना को आपने कौन-से शस्त्रों के द्वारा जीता? कामदेव को अपने अण्डर में कैसा रखा? दृष्टि- सम्यग्दर्शन, सम्पद्- सम्यग्ज्ञान और उपेक्षा- सम्यक्चारित्र वीतरागविज्ञान, इन तीनों शस्त्रों के द्वारा ही आपने उस वासना को, जो उपयोग में ही लीन- एकमेक हो रही थी, जीत लिया। अपने अण्डर में कर संयमित बना लिया, नियमित बना लिया। यह रास्ता बहुत सरल है। इसको समझने की ही देर है कि वह सारा का सारा काम समाप्त हो जाएगा जो अनन्तकाल से चला आ रहा है।

ऐसी ही भावनाओं को लेकर कोई भव्य- **कश्चिद्भव्यः प्रत्यासन्ननिष्ठः प्रज्ञावान् स्वहितमुपलिप्सुर्विविक्ते परमरम्ये भव्यसत्त्वविश्रामास्पदे क्वचिदाश्रमपदे मुनिपरिषन्मध्ये संनिषण्णं मूर्त्तमिव मोक्षमार्गमवाग्विसर्गं वपुषा निरूपयन्तं युक्त्यागमकुशलं परहितप्रतिपादनैककार्यमार्यनिषेव्यं निर्ग्रन्थाचार्यवर्यमुपसद्य सविनयं परिपृच्छति स्म।**

प्रत्यासन्न भव्य, प्रज्ञावान्- बुद्धिमान- ज्ञानवान् है। इन उपाधियों के साथ एक उपाधि है, ''स्वहितमुपलिप्सुः'' यह मुमुक्षु का सबसे पैनी दृष्टिवाला लक्षण है। मुमुक्षु वही है, जैसा पहले कहा था- ''मोक्तुमिच्छु मुमुक्षुः''। ''भोक्तुमिच्छुः बुभुक्षुः'' हो जाता है। बुभुक्षु की चाह असमाप्त है और मुमुक्षु अपनी चाह को ही मेटना चाहता है। मुमुक्षु की दृष्टि, धन के विकास में नहीं। जैसे-जैसे धन का विकास चाहेगा वैसे-वैसे वह बुभुक्षु बनता चला जाएगा। भोग का पथ संसारी प्राणी अनन्तकाल से चलता आया है। यह ऐसा पथ है ''कापथे पथि दुःखानाम्'' जिस पर ''राउन्ड'' लगाते हुये भी लगता है कि मैं बिल्कुल नये पथ पर चल रहा हूँ। वह पथ, जनपथ की ओर ले जाता है, जिनपथ की ओर नहीं। जनपथ, जिस पथ पर वासना से युक्त लोग चलते रहते हैं। जिनपथ से विपरीत दिशा की ओर ले जाता है। जनपथ जिनपथ कदापि नहीं बन सकता।

आज की यह आयोजना, जिनपथ पर चलने के लिये ही है। राग के समर्थन के लिए नहीं, वीतरागता एवं वीतरागी के समर्थन के लिए है। हमें धन का समर्थन- परिवर्तन नहीं करना किन्तु उसका परिवर्जन/विसर्जन

करने का काम, इस अवसर पर करना है। धन के द्वारा नशा, वासना का ऐसा रंग चढ़ जाता है, जिससे लगता है कि हम बहुत सुख का अनुभव कर रहे हैं। लेकिन ध्यान रखिये जैसे-जैसे धन बढ़ता जाएगा वैसे-वैसे धर्म ओझल होता जाएगा एवं उसका पथ भी। पथ पर चलने के लिए बोझिलपना भी आता जाता है। जहाँ से उपासना प्रारम्भ होती है, वहाँ बढ़ने के लिए इन पदों में शक्ति क्यों नहीं आ रही, कहाँ जा रही है? जबकि वासना की ओर बढ़ने के लिए स्वप्रेरित है। आत्मा को/जीव को उस ओर बढ़ने के लिए धन का विसर्जन आवश्यक होता है। इस प्रकार सारी इच्छाओं को विसर्जित कर अपने हित को चाहने वाला वह भव्य कहाँ जा रहा है ''क्वचिदाश्रमपदे मुनिपरिषणमध्ये'' एकान्त स्थल में जहाँ मुनि-महाराजों की मण्डली के बीचों बीच बैठे हैं आचार्य महाराज। वे रागी नहीं, वासना ग्रस्त नहीं, मोही नहीं, परम वीतरागी हैं। युक्ति और आगम में कुशल हैं। कुछ बोलते नहीं, वह तो अपनी मुद्रा के द्वारा- नग्नकाय के द्वारा मोक्षमार्ग का, बिना मुख खोले उपदेश दे रहे हैं। जैसा कि पण्डितजी ने कहा था ''चलते फिरते सिद्धों से गुरु'' ऐसे सन्त जो अरहन्त के उपासक हैं, धनपति के नहीं। धन की चाह नहीं। जो चाह की दाह में झुलसा हुआ अपना आत्मतत्त्व है उस आत्मतत्त्व को बाहर निकाल कर, धर्मरूपी परमामृत में उसे डूबोना चाह रहे हैं ताकि अनन्तकाल की दाह, झुलसन, उत्पीड़न और जलन शान्तिरूप परिवर्तित हो जाये।

इसी प्रकार शान्ति की तलाश में निकला, वह भव्य सोचता है कि- वर्तमान में जो चीजें अच्छी लग रही हैं। वे चीजें जहां तक अच्छी लगती चली जायेंगी, वहाँ तक उनके सम्पादन में लगा रहूँगा। और यह सब जनपथ का ही माहौल है। इससे मेरा उद्धार होने वाला नहीं। वह इस पथ से हटकर अपने हृदय में एक अद्भुत किरण की उद्भूति चाहता है। अत: जनपथ को छोड़कर जिनपथ की ओर आया है। वह ऐसे मुनिमहाराज आचार्य महाराज को देखकर कहता है- आज मैं कृतकृत्य हो गया। मुझे आज समझ में आ गया। **मैंने जो अन्यत्र देखा वह वहाँ पर देखने को नहीं मिला और जो यहाँ पर देखा वह अन्यत्र देखने के लिए नहीं मिला। सुख की मुद्रा देखने का अवसर आज मिला। सुख की मुद्रा यही है। अन्यत्र तो मात्र उसका अभिनव है।**

नग्नकाया में रहने वाली, आत्मा के अंग-अंग से वीतरागता फूट रही है। यही एक मात्र आत्मतत्त्व का दिग्दर्शन है। यही हितकारी मुद्रा है। हितैषी है। हितैषी का मतलब लोक हितैषी या स्वहितैषी? किसका हित? क्या संसार का हित करने की आप सोच रहे हैं। तो संसार का हित करने के लिए स्वयं अपने आपका हित करना आवश्यक है। **जो व्यक्ति हित के पथ पर नहीं चलता वह दूसरों का हित नहीं कर सकता। मात्र हित की बात कर सकता है, लेकिन हित से मुलाकात नहीं करा सकता। हित की बात करना अलग है और हित से मुलाकात अलग। मुलाकात में उसका साक्षात्कार है, बात में नहीं।** ऐसे हितकारी आत्मतत्त्व को दिखा नहीं सकते क्योंकि वह देखने में आता भी नहीं। पण्डित जी अभी-अभी कह रहे थे कि- जीवतत्त्व को पहचानना आवश्यक है। ठीक है! लेकिन उसके साथ यह भी कह गये कि- अध्यात्म ग्रन्थ आत्मतत्त्व का साक्षात् स्पर्श करा देते हैं। बात प्रासंगिक है, इसीलिए मैं उठाना आवश्यक समझता हूँ ताकि चार-पाँच दिनों तक उस पर विचार-विमर्श हो जाए।

क्रमश:..........

ध्यान के योग्य भाव

गतांक से आगे............ –आचार्यश्री आर्जवसागरजी

साधर्मी बंधुओं, हम सब लोग अपने जीवन को महान बनाने के लिये अपनी आत्मा में आध्यात्मिक ज्योति को जगाने के लिए और वह आध्यात्मिक ज्योति एक ज्ञान ज्योति बन करके अनादि काल के कर्मों को द्रव्य कर्म, भाव कर्म, नो कर्मों को ढकी हुई अपनी आत्मिक संपदा, आत्मिक वैभव गुणों की राशि को प्रगट कर दें। अपनी आत्मा निर्मल, निर्मलतर और निर्मलतम बन जाए, इसी भावना के साथ हम लोग उस ज्ञान ज्योति को जलाने के लिए अध्यात्म की महिमा को सुनकर के अपने ध्यान को निर्मल बनाते हुए इस विश्व में जहाँ पर अनेक आत्मायें उस ज्ञान ज्योति को माध्यम से शिव पद को प्राप्त हुई हैं। हम भी उन्हीं के पथ पर चलते हुए उन जैसे इस पद को पाकर के अनन्त सुखी बन जाएं यही मंगल भावना है, बस उस ध्यान का ज्ञान हम लोग अनवरत रूप से करते जा रहे हैं। अभी तक हम ध्यान के योग्य द्रव्य क्षेत्र काल और भाव तक पहुँचे हैं भाव का प्रकरण चल रहा है कि ध्यान के योग्य भाव कैसा होना चाहिए? आगम में दो प्रकार की भावनाएँ बतलाई जाती हैं जिनके संबंध में तत्त्वार्थ सूत्र में सातवे अध्याय में कहा है कि– **''जगत् काय स्वभावौ व संवेग वैराग्यार्थं''** संवेग और वैराग्य के लिए जगत और काय के स्वभाव का चिन्तन करना चाहिए। जगत के स्वभाव का चिन्तन करने से संवेग जागृत होता है और (काय) शरीर के स्वभाव का चिन्तन करने से वैराग्य की प्राप्ति होती है। ये दो भावनाएँ हमारे ध्यान को निर्मल बनाती हैं।

संवेग की प्राप्ति के लिए जगत का कैसा चिन्तन करना चाहिए? ऐसा प्रश्न इस धर्मध्यान में अवश्य उठता है तो यह जगत जो कि 343 घन राजू प्रमाण और 14 राजू ऊँचा है, सात राजू मोटा है, नीचे 7 राजू चौड़ा है बीच में एक राजू चौड़ा है और बीच से ऊपर तक के हिस्से को भी सबसे बीच में देखेंगे कि 5 राजू चौड़ा है पुनः ऊपर जाकर एक राजू चौड़ा है। पुरुषाकार कोई व्यक्ति अपने पैर फैलाकर कमर पर हाथ रखकर खड़ा हो जाए तो जो आकृति आती है लगभग वही आकृति हमारे इस लोक की है। इसमें अनंतानंत जीव राशि भरी हुई है, यह लोक षट् द्रव्यमय है इसमें जीव, पुद्‌गल, धर्म, अधर्म, आकाश और काल ऐसे षट् द्रव्य हैं। इस लोक के बाहर आकाश के अलावा कोई अन्य द्रव्य नहीं है। आकाश तो अखण्ड है, जो लोक में है वैसा ही अलोक में है। लेकिन आकाश के साथ और भी अन्य द्रव्य इस लोक में हैं इसलिए इसको कहते हैं लोक। लोक की परिभाषा है– **'लोक्यन्ते इति लोका'**। जिसमें देखे जाते हैं अर्थात् आकाश के साथ और भी द्रव्य जिसमें देखे जाते हैं उसे कहते हैं लोकाकाश। और इसमें आकाश के साथ अन्य द्रव्य नहीं देखे जाते हैं उसे कहते हैं अलोकाकाश। ये 14 राजू ऊँचा जो है इसमें ही पाये जाते हैं और भी द्रव्य, आकाश के साथ जीव, पुद्‌गल, धर्म, अधर्म और काल। इनमें जो द्रव्य हैं वे आपने–अपने परिणमन सहित हैं। सभी में परिणमन हो रहा है और वह परिणमन काल के निमित्त से होता रहता है और वह द्रव्य स्वयं उपादान है। परिणमन में कारण स्वरूप और भी जो हम देख रहे हैं, वह है पुद्‌गल रूप, रस, गंध, वर्ण वाला है और वह धर्म जीव पुद्‌गल को चलने में निमित्त बनता है। जबरदस्ती नहीं चलता है जैसे कि मछली को चलाने में जल निमित्त होता है। मछली कहीं जा रही है और जल कहीं और

जा रहा है। जल चला रहा है ऐसा नहीं; सहायक है बस वैसे ही धर्म द्रव्य भी जीव और पुद्गल को चलने में निमित्त बन जाता है। जैसे कोई व्यक्ति जा रहा है एक जगह छाया है, छाया रोकती नहीं है रुकना चाहो तो रुक जाओ। इस प्रकार से अधर्म द्रव्य भी सहायी है जबरदस्ती नहीं रोकता। आकाश तो आप जानते ही हैं कि जो सभी द्रव्यों को स्थान देने में अवगाहन देने में सहायी है वो आकाश है, ये ऐसा द्रव्य है जिसके बिना कोई द्रव्य नहीं रह सकते अगर वह जगह न दे तो कोई द्रव्य नहीं रह पायें। और काल द्रव्य जो है वह सभी को परिणमन करने में सहायता देता है। निश्चय काल एक कील के समान है और व्यवहार काल एक चाक के समान, ऊपर चाक घूमता है नीचे कील रहती है। चाक के समान व्यवहार काल परिवर्तनशील है जो भी आप देखते हैं। समय, आवली, घड़ी, घण्टा, प्रहर, रातदिन, पक्ष, मास वगैरह सभी इसके भेद हैं। ऐसे काल के परिणमन चलते रहते हैं, और इसके माध्यम से जीव अपने कर्त्तव्यों को करता है, संयम को पालता है, और इन्हीं के निमित्त वह संसार की अवस्थाओं में भ्रमण करता हुआ और इसी काल के निमित्त से वह पुरुषार्थ करके निर्वाण को प्राप्त कर लेता है, वह चतुर्थ काल जो ऐसा काल है कि जिस कर्म भूमि में तीर्थंकरों का समागम जब मिलता है या उनके तीर्थ काल में उसे ऐसी योग्यता मिलती है। उसे ऐसा संहनन मिलता है जिसके माध्यम से वह मोक्ष भी पा लेता है इसलिए ऐसी योग्यताओं की आवश्यकता है योग्यता मिले बिना काम नहीं होता है। उपादान और निमित्त, दोनों की बड़ी महिमा है, इसलिए इष्टोपदेश में भी आचार्य पूज्यपाद स्वामी ने यही भाव व्यक्त किया है। जैसे लोक का स्वरूप हम जान रहे हैं इसमें अनंतानंत जीव राशि भरी हुई है और एक निगोदिया के अन्दर अनन्त निगोदिया। निगोदिया जीव राशि कभी कम नहीं होने वाली। अक्षय अनन्त राशि है कितने भी अनन्तानंत सिद्ध परमेष्ठी बन गये हैं। तो भी राशि बहुत अधिक है, कभी समाप्त होने वाली नहीं है। इस जगत में हम लोग अनादि काल से त्रस नाड़ी के अंदर त्रस रूप से और स्थावर रूप से एक इन्द्रिय रूप से भी त्रस नाड़ी के बाहर भी लेकिन लोक के अन्दर अनन्तों बार जन्म मरण कर चुके हैं, फिर भी हमको कभी इस जन्म मरण के चक्कर से निकलना नहीं हुआ, चारों गतियों की चौरासी लाख योनियों अनादि काल से धारण करते हुए आ रहे हैं। और हम यह भी कह सकते हैं कि आप अनादि काल से चौरासी लाख योनियों में ही भ्रमण करते आ रहे हैं ऐसा भी नहीं कह सकते हैं। नित्य निगोदिया तो जीव होते हैं। चौरासी लाख योनियों से वह भी एक योनि है। लेकिन जो हमेशा से निगोद में ही है कभी निकले ही नहीं हैं वे नित्य निगोदिया जीव कहलाते हैं। और यह जरूरी नहीं है कि आप चौरासी लाख योनियों को धारण करें ही। ये सिर्फ उदाहरण है जिसके माध्यम से ज्ञात होता है कि जीव को बस, दो-तीन योनि पर्याप्त हैं। बताते हैं कि भरत चक्रवर्ती के जो 923 पुत्र थे। वे जन्म से ही बोलते नहीं थे गूंगे नहीं थे वे अपने माता-पिता से भी नहीं बोले। क्या कारण था? लोग कहते थे कि चक्रवर्ती जैसे महान पुण्यवान आत्मा होकर के उनके ऐसी संतानें जो जन्म से जो गूंगी हों। इतने पुण्यहीन। महान पुण्यशाली मनुष्यों के जो प्रधान होते हैं नरपति बोलते हैं उनके जीवन में ऐसा कुछ समझ में नहीं आता। लेकिन एक रहस्य की बात है कि वे बिलकुल नहीं बोले और वे जवान होने को हैं तब तक बोले ही नहीं क्यों? चक्रवर्ती सोचता है कि कोई ट्रीटमेंट होना चाहिए, चक्रवर्ती सोचता है कि कोई इलाज नहीं सूझ रहा है मैं तो जा रहा हूँ तीर्थंकर के समवशरण में, हमारे जो महान आत्मा पिता थे वे केवलज्ञान को प्राप्त होकर के समवशरण से विभूषित हैं चलो

उन्हीं से सुनेंगे कि हमारे पुत्र क्यों ऐसे हुए? और क्या इनके अन्दर योग्यता है? बताएंगे प्रभु। जब पहुँचते हैं प्रभु के समवशरण में अपने पुत्रों को साथ ले करके। प्रभु से प्रश्न किया कि हे प्रभु! ये तो बता दीजिये कि इतना महान कुल है आपका, चक्रवर्ती पद के धारी हैं हम जहाँ किसी प्रकार के पुण्य की कमी नहीं है लेकिन गृह में गूंगे पुत्र हों ऐसी बात क्यों? ये क्यों नहीं बोलते? तो दिव्य ध्वनि में आया कि तुम से नहीं बोलेंगे हमसे बोलेंगे। तुमसे नहीं हमसे बोलेंगे ये क्या बात? ऐसा पक्षपात क्यों? पक्षपात नहीं था सौभाग्य दिया उन्होंने ये उनका पुरुषार्थ था। ये उनकी उदासीनता थी। ये उनका वैराग्य था। ये अनुभव का अंत था और मोक्ष पक्ष का प्रारम्भ था, और यह जन्म अब कभी दुबारा नहीं मिलेगा इसका द्योतक था, इतना ही नहीं और यह तद्‌भव मोक्षगामीपने का संकेत था। यह एक चक्रवर्ती को सबक भी था। ये जो-जो बोलते नहीं हैं उन्हें गूंगे मत समझना, कभी उनकी उदासीनता, गूंगेपन को दिखलाती है, और संसारी मोही प्राणियों को उनकी उदासीनता गूंगेपन से कम से कम कुछ लाभ ही दे जाती है। अगर ऐसा मालूम होता हो कि मुझसे बोलते नहीं हैं, तो बहुत अधिक दु:ख होता। लेकिन गूंगे हैं चलो तो गूंगे ही सही, हमारा पुण्य कम सही लेकिन ये नहीं कि मेरे बेटे मेरे से बोलते नहीं ऐसा कोई दर्द नहीं रहा, दु:ख नहीं रहा और जब आदिनाथ प्रभु ने कहा तब रहस्य मालूम पड़ा कि कारण ये है। उन्हें तो आत्म कल्याण करना है, ऐसा महा दु:ख सहा है उन्होंने, जिसकी कल्पना ऐसे कैसे करेंगे-

''एक श्वास में आठ-दस बार, जन्मयो मर्‌यो दु:ख भार''

उन्होंने तो सहन किया, सहन करते-करते अपने कर्ज को चुका दिया। हल्के हो गए, हल्केपन में उन्हें मनुष्य पर्याय मिल गई, ये सौभाग्य था, इसमें भी उन्हें मनुष्य पर्याय मिल गई। वे जन्म से ही नहीं बोले, कारण क्या था कि उनका मन ही नहीं होता था किसी से बोलने का, इतना कुछ सहा है कि अब संसार में रहना नहीं भा रहा, इसलिए बोलना भी उन्हें अच्छा नहीं लग रहा। किसी से नहीं बोले, उदासीन रहे, उदासीन, धन्य।

जब वे समवशरण में पहुँचे तो प्रभु से बोले हे प्रभु! कितना दु:ख सहा है हमने, हो सकता है उनको जाति स्मरण हो गया हो, पूर्वभव का ज्ञान हो जाना इसे जाति स्मरण बोलते हैं। इस जाति स्मरण से उनका धर्मध्यान शुरु हो गया था। धर्म ध्यान से कोई निकट भव्य पुण्यात्मा संसार शरीर और भोगों से उदासीन हो जाता है।

क्रमश:........

(संकलन-श्रीमति अनीता सुधीर जैन, डी.के. काटेज, भोपाल)

सूचना

श्रीमती श्वेता पापड़ीवाल (जैन), मुंबई ''ZINDAGILOGY- the study of life'' के नाम से कई कार्यशालाओं का आयोजन देशभर में करती हैं। इनकी कार्यशालाओं के मुख्य विषय हैं- युवा पीढ़ी में भटकाव, रिलेशनशिप बैलेन्सिंग, पेरेंटिंग, मैरिज प्रिपॅरेटरी प्रोग्राम, परिवार में बिखराव, युवा पीढ़ी में संस्कारों का बीजारोपण इत्यादि। देशभर में कहीं भी सामाजिक या किसी भी सांस्कृतिक कार्यक्रम में श्वेता पापड़ीवाल (जैन) की कार्यशालाओं के आयोजन हेतु सम्पर्क किया जा सकता है +91 9870706343, +91 9820606343

ॐ नमः सिद्धेभ्यः
शान्तिर्जिनो मे भगवान् शरण्यः।

सत्पथ-दर्पण

गतांक से आगे.....

स्व. पं. अजित कुमार शास्त्री
(पूर्व जैनगजट संपादक)

नौवीं वार्ता

मुनि का लक्षण

श्री समन्तभद्राचार्य ने धर्म गुरु का लक्षण-निर्देश करते हुए रत्नकरण्ड श्रावकाचार में कहा है-

विषयाशावशातीतो निरारम्भोऽपरिग्रहः।
ज्ञानध्यानतपोरक्तस्तपस्वी सः प्रशस्यते ॥10॥

अर्थ- जो महान व्यक्ति पाँचों इन्द्रियों के विषय-भोगों से अतीत है(विषयभोगों का परित्यागी है), गृहस्थाश्रम- सम्बन्धी समस्त आरम्भों और परिग्रहों का त्यागी है तथा जो ज्ञान-आराधना और अन्तरंग तपश्चरण करने में लीन रहता है, वह महाव्रतधारी तपस्वी प्रशंसनीय है।

खेद है कि ऐसे नग्न दिगम्बर तपस्वी की निन्दा विविध प्रकार से कहानपंथ साहित्य करता है। दिगम्बर मुनि बनना इस कलिकाल में कितना दुर्लभ है, इस विषय पर श्री सोमदेव सूरि उपासकाध्ययन में कहते हैं-

काले कलौ चले चित्ते देहे चान्नादिकीटके।
एतच्चित्रं यदद्यापि जिनरूपधरा नराः॥796॥

अर्थ- इस कलिकाल में मनुष्य का मन सदा विषयभोगों में चंचल बना रहता है और यह शरीर खाने-पीने का कीड़ा बन गया है, ऐसे कलिकाल में जिनेन्द्र-मुद्रा को धारण करने वाले दिगम्बर मुनि पाये जाते हैं, यह महान आश्चर्य की बात है।

सम्यग्दृष्टि धार्मिक व्यक्ति को इस सर्वोच्च साधुता की प्रतीक जिनेन्द्र-मुद्रा (जिनेन्द्र भगवान की छाप) का त्रियोग से आदर करना चाहिए। ऐसा न करके जो व्यक्ति उनकी निन्दा करते हैँ, वे स्वयं आत्म-निरीक्षण करें कि क्या यह सम्यक्त्व का चिन्ह है?

अभव्य द्रव्यलिंगी तथा कोई-कोई भव्य मुनि भी द्रव्य लिंगी होते हैं, जिनका बाहरी रूप नग्न दिगम्बर होता है परन्तु उस महाव्रती आचरण के अनुसार उनका अन्तरंग चारित्र नहीं होता। इसमें प्रत्याख्यानावरण कषाय का उदय मुख्य कारण होता है। परन्तु उस कर्म-उदय पर उस द्रव्य-लिंगी मुनि का कुछ वश नहीं चल सकता। उनमें से भव्य तो कर्म-क्षय करने के लिए ही शारीरिक मोह तथा सांसारिक विषय-वासनाओं को छोड़कर मुनिचर्या करता है, ऐसा करना ही उसके अपने वश की बात है, अत: उसके स्व-वश आचरण में प्राय: कमी नहीं होती। यदि विशेष कर्म-उदय-वश उसके अन्तरंग चारित्र में कुछ कमी है तो उस पर उसका वश नहीं।

भगवान आदिनाथ एक हजार वर्ष तक नग्न दिगम्बर रूप में तपश्चरण करते रहे किन्तु उनके पुत्र भरत

चक्रवर्ती अन्तर्मुहूर्त्त तक ही (मुनि दीक्षा लेकर आत्म-ध्यान प्रारम्भ करने तक ही) तपस्वी बने। जो अर्हन्त-पद; भगवान आदिनाथ को एक हजार वर्ष तपश्चरण करने के बाद मिला, वह अर्हन्त-पद भरत चक्रवर्ती को एक घण्टे के भीतर ही मिल गया। इसलिए मुनि का द्रव्यलिंग उसके अपने अधीन होता है, भावलिंग उसके अपने अधीन नहीं होता।

द्रव्यलिंग भावलिंग

मुनियों का नग्न दिगम्बर रूप द्रव्यलिंग कहलाता है और प्रत्याख्यानावरण कषाय के क्षयोपशम से छठे सातवें आदि गुणस्थान-वाली आत्म-शुद्धि होना मुनि का भावलिंग है। तदनुसार द्रव्यलिंगी मुनि मिथ्या-दृष्टि ही होते हों, सर्वथा ऐसी बात नहीं है। अनन्तानुबन्धी कषाय के अनुदय वाले तथा अप्रत्याख्यानावरण और प्रत्याख्यानावरण कषाय-उदय वाले यानी अन्तरंग से असंयत सम्यग्दृष्टि भी द्रव्यलिंगी मुनि होते हैं। एवं अनन्तानुबन्धी तथा अप्रत्याख्यानावरण के अनुदय (क्षयोपशम) वाले किन्तु प्रत्याख्यानावरण कषाय के उदय वाले यानी-अन्तरंग में सम्यग्दृष्टि श्रावक के (पंचम गुणस्थान के) भावधारी दिगम्बर मुनि भी द्रव्यलिंगी हुआ करते हैं। यह अन्तरंग परिणामों की विचित्रता है। इस पर उन मुनि का वश नहीं चलता।

परन्तु इतनी बात अवश्य है कि मति श्रुतज्ञानी व्यक्ति किसी मुनि के भावलिंग को अपने ज्ञान से नहीं जान सकता। भावलिंग तो प्रत्यक्ष यानी-केवलज्ञान आदि दिव्यज्ञान-गम्य है, मतिज्ञान श्रुतज्ञान से नहीं जाना जा सकता। अतः श्री कहान भाई या उनके अनुयायी किसी भी मुनि के विषय में यह नहीं बतला सकते हैं कि "यह द्रव्यलिंगी है, भावलिंगी नहीं है।"

ऐसा स्पष्ट न जानते हुए भी मुनि के द्रव्यलिंग की अवहेलना करना, आदर सत्कार, विनय, प्रणाम आदि न करना, निन्दा करना गुरु-श्रद्धा या सम्यग्दर्शन का चिन्ह नहीं है।

प्रकरण न होते हुए भी श्री कहान भाई ने समयसार-प्रवचन में जो दिगम्बर मुनि की अनुचित आलोचना की है, इसके स्थान पर यदि वे स्वयं भावलिंगी मुनि बन कर आदर्श उपस्थित करते तो युक्ति-युक्त ठीक होता और तब उनके वचन में कुछ सार और बल होता।

स्वयं मुनिपद प्राप्त करने में असमर्थ होकर उस महान पद-धारी साधु की निन्दा करना अनुचित बात है, पुष्पडाल मुनि वर्षों तक मात्र द्रव्यलिंगी मुनि बने रहे। इसी प्रकार भवदेव भी वर्षों तक द्रव्यलिंगी मुनि बने रहे, किन्तु संघ में रहे और संघ के भावलिंगी मुनि उनको नमोस्तु आदि करके मुनि का व्यवहार करते थे, श्रावक उन्हें नवधा भक्ति पूर्वक आहार देते थे, किसी ने भी उनकी निन्दा नहीं की।

जड़-क्रिया

शास्त्रि परिषद् के प्रस्ताव में जो नौवीं बात है, वह श्री कहान भाई ने अपनी पुस्तक मोक्ष-मार्ग की किरण के सातवें अध्याय पृष्ठ 180 पर यों लिखी है-

"दूसरों को उपदेश देना मुनि का लक्षण नहीं है, उपदेश तो जड़ क्रिया है।"

श्री कहान भाई की इस गलत बात का समर्थन, बिना किसी युक्ति को उपस्थित किये श्री पं. वंशीधर जी ने ट्रेक्ट के पृष्ठ 28-29 पर किया है जिसमें केवल मोक्षमार्ग प्रकाशक किरण का प्रकाशित मैटर उद्धृत कर दिया

है। अस्तु।

यहाँ पर विचारणीय बात यह है कि "किसी भी संसारी जीव की कोई भी क्रिया बिना शरीर का (जिसमें कि बोलने के अंग जीभ, ओठ, कंठ, तालु, दांत तथा विचार करने के अंग द्रव्यमन, मस्तिष्क भी सम्मिलित हैं) सहारा लिये क्या स्वाधीन भी है?"

संसारी जीव का जीवन भी जड़ द्रव्य रूप आयुकर्म के उदय-आधीन एवं साँस, वायु, जल, भोजन, शरीर, इन्द्रिय (द्रव्य इन्द्रिय), द्रव्य-मन, वचन के आश्रित हैं। जिस समय तक इन जड़ पदार्थों का आश्रय संसारी जीव को मिलता है, तब तक वह जीता है, जिस क्षण इन जड़ पदार्थों का आश्रय छूट जाता है उसी समय जीव की अनचाही मृत्यु हो जाती है। जीवन-मरण की इस प्रक्रिया से सभी छोटे-बड़े, ज्ञानी-अज्ञानी, कहानपंथ के साहित्यकार तथा उनके समर्थक सुपरिचित हैं। वे परिचित ही नहीं हैं अपितु उनकी भी समस्त जीवन-प्रक्रिया जड़-द्रव्याश्रित अनुभूत भी हैं। वे कहने को तो द्विक्रियावाद आदि की बात लिखकर कुछ भी कह ले परन्तु वे स्वयं उस द्विक्रियावाद से क्रियात्मक रूप में एक क्षण भी छूट नहीं सकते। अत: यह बात कहना और लिखना नि:सार है, जिसे करके वे एक दिन भी दिखा नहीं सकते।

यह बात ठीक है कि संसारी जीव का शरीर पौद्‌गलिक है, जड़ और आत्मा अमूर्तिक चैतन्य-मूर्ति है। यह भी ठीक है कि प्रत्येक द्रव्य अपनी ही क्रिया कर सकता है, अन्य द्रव्य की क्रिया नहीं कर सकता परन्तु इसके साथ ही विचारणीय यह बात भी है कि मूर्तिक (कार्माण द्रव्य) और अमूर्तिक (आत्म द्रव्य) का परस्पर अनादिकालीन बन्ध है। इस असंभव-से प्रतीत होने वाले जड़ और चेतन द्रव्य के पारस्परिक बन्ध के कारण न तो स्वतन्त्र अकेला जीव कुछ कार्य कर सकता है और न जीव-बद्ध पुद्‌गल स्वतंत्र अकेला कोई कार्य कर सकता है।

जिस तरह साईकल को साईकल-सवार चलाता है और साईकल अपने सवार मनुष्य को कहीं से कहीं पहुँचा देती है, यानी चलाती है। बिना सवार की प्रेरणा के साईकल नहीं चल सकती और बिना साईकल के उसका सवार उतनी सुविधा तथा तेजी से यात्रा नहीं कर सकता, संसारी जीव और उससे सम्बद्ध जड़ पुद्‌गल की भी ऐसी ही बात है।

जीव की इच्छा और प्रेरणा होती है तब पौद्‌गलिक पैर जीव को चला कर कहीं का कहीं पहुँचा देते हैं। यदि पैर टूट जाते हैं तो जीव जहाँ का तहाँ पड़ा रहता है। जीव अपने शारीरिक हाथों को जब प्रेरणा करता है तब ही वे हाथ लिखना, उठाना, धरना आदि कार्य करते हैं। किन्तु यदि हाथों को लकवा मार जावे तो वे ही हाथ जीव को इच्छा होते हुए भी कुछ काम नहीं कर सकते। इसी तरह आत्मा की जब प्रेरणा होती है, तभी मुख, जीभ द्वारा शब्द-वर्गणाएँ भाषा रूप परिणत होती है। यदि कण्ठ, जीभ, मुख पक्षाघात (लकवा) से अथवा अन्य किसी कारण से क्रियाहीन हो जावें तो चाहता हुआ भी आत्मा अपने भाव को शब्दों द्वारा प्रगट नहीं कर सकता।

इस तरह चलना, फिरना, लिखना, करना, धरना, बोलना चलना आदि शारीरिक कार्य आत्मा और शरीर की मिश्रित साझेदारी से हुआ करते हैं। अतएव न तो ये कोरे अकेले आत्मा के कार्य हैं और न ये केवल शरीर की जड़क्रिया हैं।

निर्जीव (मुर्दा) शरीर की किसी क्रिया को तो जड़क्रिया कहा जा सकता है परन्तु जीवित (सजीव) शरीर की क्रिया को जड़क्रिया कहना वज्रभूल है। जड़ शरीर तो एक शब्द भी नहीं बोल सकता। जड़ शरीर को तो अग्नि पर रख दिया जाता है फिर वह एक शब्द तक मुख से नहीं निकालता, जब कि सजीव शरीर एक चिनगारी के छूते ही चीखने लगता है।

श्री कुन्दकुन्द आचार्य का अभिमत

श्री कुन्दकुन्द आचार्य ने पंचास्तिकाय का प्रारम्भ करते हुए इसी जड़ शब्दात्मक श्रुत को सिर झुका कर नमस्कार किया है-

समणमुहुग्गदमट्ठं चदुग्गदिणिवारणं सणिव्वाणं।
ऐसो पणमिय सिरसा समयमिमं सुणह वोच्छामि॥2॥

अर्थ- महान श्रमण भगवान महावीर के मुख से निकले हुए अर्थमय चतुर्गति संसार को नष्ट करने वाले, मोक्ष प्रगट करने वाले, इस समय को मैं सिर झुका कर प्रणाम करके इस पंचास्तिकाय समयसार को कहता हूँ, सो सुनो।

श्री कहान भाई तो कहते हैं कि-

''दूसरों को उपदेश देना मुनि का लक्षण नहीं, उपदेश तो जड़-क्रिया है।''

किन्तु पंचास्तिकाय के मंगलाचरण में श्री कुन्दकुन्द स्वामी सबसे बड़े मुनि, सर्वज्ञ, पूर्ण वीतराग भगवान महावीर को उपदेश-दाता लिख रहे हैं, उस जड़ उपदेश को चारों गति के भ्रमण का नाशक तथा निर्वाणदाता बतला रहे हैं, वे उस उपदेश (द्रव्य श्रुत) को सिर झुका कर नमस्कार कर रहे हैं। एवं स्वयं भी उस जड़क्रिया के कर्ता बन कर पंचास्तिकाय को कहने या लिखने की प्रतिज्ञा कर रहे हैं। तथा च स्वाध्यायकर्ताओं एवं श्रोताओं को पंचास्तिकाय सुनने की (लोट् लकार रूप) आदेशात्मक (आज्ञारूप) प्रेरणा कर रहे हैं।

क्या यह उपदेश देना वीतराग तीर्थंकर एवं महान मुनि की क्रिया नहीं है या यह उपदेश जड़क्रिया है? यह एक प्रश्न है जिसका स्पष्ट उत्तर श्री कहान भाई तथा पं. वंशीधर जी दें।

अपराधी भी निरपराध

संसार में जितने कुकर्म, अपराध, अत्याचार, दुराचार होते हैं वे सब शरीर, वचन और मन से होते हैं और ये तीनों-द्रव्यमन, वचन और शरीर जड़ पौद्गलिक पदार्थ हैं, अत: वे सभी कुकर्म, अपराध, अत्याचार, दुराचार श्री कहान भाई के लिखे अनुसार जड़क्रिया रूप हैं, तो आत्मा इस क्रिया का अपराधी क्यों माना जाता है क्योंकि जड़क्रिया करना आत्मा का लक्षण नहीं एवं शरीर तो पर पदार्थ है।

फिर किसी मनुष्य के हत्यारे को प्राण का दण्ड (फांसी) क्यों मिलता है, क्योंकि वह हत्या तो जड़-क्रिया है, आत्मा की क्रिया नहीं है? शराब पीना, मांस खाना क्यों निषिद्ध है क्योंकि खान पान तो जड़-क्रिया है? व्यभिचार भी आत्मा के लिए पाप क्यों हो, क्योंकि वह भी शरीर की जड़-क्रिया है?

इस तरह जड़-क्रिया के सिद्धान्त से संसार में आत्मा के लिये त्याज्य कोई भी अपराध या दुराचार नहीं रहता, फिर नरक जाना, फांसी चढ़ाना, कारावास (जेल) आदि दण्ड क्यों दिया जाता है तथा क्यों भोगा

जाता है?

स्वयं भी करते हैं

श्री कहान भाई ने मुनियों के लिए तो कह दिया कि 'दूसरों को उपदेश देना मुनियों का लक्षण नहीं है, उपदेश देना जड़क्रिया है।' परन्तु वे स्वयं प्रतिदिन जो श्रोताओं को उपदेश देते हैं सो क्या वह उनके आत्मा की क्रिया है? या क्या उनका उपदेश जड़-क्रिया है? यदि है तो वह उस जड़-क्रिया को क्यों करते हैं? वे जो अतिव्याप्ति दोष मुनियों के लक्षण में दिखा रहे हैं क्या वह दोष आपके प्रवचन में नहीं आता?

तथा च-सम्यग्दर्शन ज्ञान चारित्र की एकता रूप मुनि का लक्षण मुनियों में नहीं पाया जाता, इस बात को कौन अल्पज्ञ व्यक्ति साधिकार कह सकता है?

आधार

कहानपंथ साहित्य के पक्ष-पोषण के लिये लेखक ने जो समयसार की गाथा 86-87 तथा 321-323 का संकेत किया है, सो इसके साथ ही लेखक पंचास्तिकाय की दूसरी गाथा और उसकी टीकाओं का भी अवलोकन करें तथा श्री कुन्दकुन्द आचार्य की नय-शैली का अनुभव करके करना भ्रम निरास करें। श्री कुन्दकुन्द आचार्य ने अपने ग्रन्थ में केवल निश्चय नय का एकान्त पक्ष नहीं लिया।

उन्होंने जिस समयसार में यह लिखा है कि एक पदार्थ दूसरे पदार्थ कुछ नहीं कर सकता, उसी समयसार में यह भी स्पष्ट लिखा है कि संसारी जीव जड़-कर्म आयु के उदय से जीता है, आयु कर्म के क्षय से आता है, आत्मा के सम्यक्त्व ज्ञान चारित्र का पौद्गलिक दर्शन मोहनीय ज्ञानावरण, चारित्र मोहनीय कर्म प्रतिबन्ध करता है।

2. मोक्षमार्ग प्रकाशक पृ.327 का कथन मिथ्या दृष्टि की अपेक्षा से है, सम्यग्दृष्टि मुनि की अपेक्षा से नहीं है। किन्तु सम्यग्दर्शन, ज्ञान, चारित्र आत्मा के अमूर्तिक गुण है, वे दिव्य ज्ञान-गम्य हैं। श्री कहान भाई तथा पं. वंशीधर जी दिव्य-ज्ञाता नहीं हैं जिससे वे किसी एक के सम्यक्त्व, मिथ्यात्व को स्पष्ट जान सकें।

अत: ये आधार कहानपंथ-साहित्य की गलत मान्यता को प्रकट करते।

निमित्त-कर्ता

स्वतन्त्रता से किसी भी काम के करने वाले को 'कर्ता' (करने वाला) कहते हैं। वह कर्ता दो प्रकार का होता है- 1. उपादान कर्ता, 2. हेतु-कर्ता या निमित्त कर्ता। जहाँ स्वयं उपादान कारण किसी कार्य को करता है उस क्रिया का उपादान कर्ता होता है। जैसे- विद्यार्थी पढ़ता है उस पढ़ने की क्रिया का करने वाला स्वयं विद्यार्थी है, अत:'पढ़ता है' इस क्रिया का विद्यार्थी स्वयं उपादान रूप से कर्ता है।

जहाँ पर उपादान से भिन्न कोई अन्य पदार्थ किसी क्रिया में प्रेरक (प्रेरणा करने रूप), बलाधान (उस काम में सहायक) या उदासीन रूप से करने वाला होता है वहाँ वह अन्य पदार्थ उस क्रिया का हेतु-कर्ता या निमित्त-कर्ता होता है। जैसे अध्यापक पढ़ाता है। यहाँ विद्यार्थी के ज्ञान उत्पादन क्रिया में अध्यापक निमित्त-कारण है, अत: वह अध्यापक विद्यार्थी की ज्ञान-वृद्धि क्रिया का हेतु-कर्ता है।

इसी प्रकार जीव संसार में भ्रमण करता है इस संसार-भ्रमण क्रिया का हेतुकर्ता या निमित्त-कर्ता

पौद्‌गलिक जड़ कर्म गति, आयु है, क्योंकि गति कर्म की प्रेरणा (जबरदस्ती) से जीव को नरक, निगोद आदि गतियों में भ्रमण करना पड़ता है।

श्री कुन्दकुन्द आचार्य पंचास्तिकाय में लिखते हैं-

णेरइतिरियमणुआ देवा इदि णामसंजुदा पयडी।
कुव्वंति सदो णासं असदो भावस्स उप्पादं॥55॥

अर्थ- नरक, तिर्यञ्च, मनुष्य, देवगति नाम कर्म आत्मा के सत् (पूर्व पर्याय के अस्तित्व) का नाश करता है और असत् (नई पर्याय) की उत्पत्ति करता है।

यहाँ श्री कुन्दकुन्द आचार्य ने आत्मा की नरक, तिर्यञ्च, मनुष्य, देव पर्याय का हेतुकर्ता पौद्‌गलिक नाम कर्म को बतलाया है। विस्तार भय से यहाँ श्री अमृतचन्द्र सूरि तथा श्री जयसेन आचार्य की टीका नहीं दे रहे, जिन भाइयों को जिज्ञासा हो, वे वहाँ देख लें। जो मुमुक्षु भाई या कहानपंथ के नेता आत्मा के संसार-भ्रमण कर्ता द्विक्रियावाद की आशंका खड़ा करके नाम कर्म रूप अन्य द्रव्य को नहीं मानते, वे उन दोनों टीकाओं को देखकर अपनी भ्रान्ति अवश्य दूर कर लें।

इसी प्रकार शरीरस्थ आत्मा उपदेश क्रिया का हेतुकर्ता है। यानी- मुनियों की जड़ रूप पौद्‌गलिक रसना इन्द्रिय (जीभ) भव्य श्रोता-गणों को आत्म-कल्याण करने वाला उपदेश देती है परन्तु उस कल्याणकारी उपदेश का प्रेरक (प्रेरणा करने वाला) हेतुकर्ता मुनि का आत्मा होता है। बिना मुनि के आत्मा के, या उनकी प्रेरणा के बिना वह रसना (जीभ) उपदेश का एक अक्षर भी नहीं कह सकती।

केवली के परम औदारिक शरीर में जब आत्मा होता है तब ही उसके निमित्त से दिव्य ध्वनि खिरती है। इसलिए उस दिव्य-ध्वनि रूप उपदेश के हेतुकर्ता तीर्थंकर केवली भगवान होते हैं।

क्रमश:.............

धर्मात्मा साधुओं से ग्लानि नहीं करता

-आचार्यश्री आर्जवसागर

जैन आचार्यश्री आर्जवसागर जी ने अपने प्रवचन में कहा कि अहिंसा धर्म की रक्षा के लिए एवं हिंसा से बचने के लिए जैन मुनि जल में स्नान नहीं करते, क्योंकि स्नान करने से सूक्ष्म जीवों की हिंसा हो जाती है। सच्चा धर्मात्मा उन साधुओं से ग्लानि नहीं करता, अपितु उनके धर्म प्रति अनुराग रखता है। क्योंकि उनकी आत्मा धर्म से परिशुद्ध होती है। परन्तु उन सांसारिक पंच पापों से जिन गृहस्थों की आत्मा भी मैली होती रहती है उन गृहस्थों को नितप्रतिदिन वस्त्रों को धोने के साथ-साथ शरीर को स्नानादिक से स्वच्छ रखना पड़ता है क्योंकि इसके बिना प्रभु के अभिषेक, पूजन एवं गुरु व व्रतियों के लिए आहारादिक के देने योग्य नहीं हो सकते अत: भाव शुद्धि हेतु जैन धर्म में सोला व शुद्ध वस्त्रों का भी बड़ा महत्त्व है।

साभार : आर्जव-वाणी

मोक्षार्थियों को सौगात

''आचार्य पूज्य आर्जव प्रणमामि नित्यं''

प्रतिष्ठाचार्य पं. अखिलेश शास्त्री 'रमगढ़ा'

इस अनादि सतत् संसार में अनेकानेक जीवों का मनुष्य भव में आवागमन होता रहता है। दुर्लभता से प्राप्त इस मनुष्य देह को पाकर कई जीव इस मानव देह को सजाने संवारने में बार-2 भोज्य पदार्थों से पुष्ट करने में और कितने ही जीव पंच इन्द्रियों के विषय भोगों में अपने शरीर को लगा कर इस शरीर का भोग बना देते हैं।

वहीं कुछ ऐसे जीव हैं जो संसार की असारता को जाने बिना अपने हिताहित के ज्ञान से शून्य होकर इस शरीर से मिथ्या मार्ग का पोषण करके अपने आपको धर्माधिकारी समझ अभिमान से भरे पड़े हैं।

आज जब पूज्य आचार्य भगवंत जी आर्जवसागरजी महाराज के जीवन को देखा तो वास्तविकता का मान हुआ कि न जाने कितनी बार इन्द्रिय भोगों को पाया परन्तु आज तक शुभ योग से कोई योग्य गुरु को न पा सकने के कारण योगों के एकाग्रकरण को नहीं जान पाया। पूज्य गुरुदेव के दर्शन करके ऐसा लगा मानो गुरुदेव भवों-2 की साधना से ही अपने मन वचन काया को एकाग्र करके तपाराधना कर रहे हैं। विगत 25 वर्षों से अपने कठोर चारित्र से जीव जगत को लाभान्वित कर रहे हैं। जितना कठिन आपका चारित्र है उससे कई गुना आपका जीवन में (आर्जव) गुण समाया है आप में इतनी सरलता है कि आपके सान्निध्य में आने वाला हर जीव आप जैसा ही हो जाता है तभी तो गुरुदेव विद्यासागरजी ने आपको आर्जवसागर नाम प्रदान किया। नाम के साथ-साथ आचार्य गुरुवर ने आप में ऐसे गुणों को आरोपित किया जिन गुणों में कभी हानि नहीं दिखाई देती है। गुरु के साथ-2 ऐसी भाषा को देखिये जिसमे ऐसे संस्कारों को प्रदान कर आपको गुणों के उच्च शिखर तक पहुँचा दिया। यूं तो पारस पत्थर में इतनी शक्ति स्वमेव ही है कि वह अपने निकट आने वाली कुधातु को सुधातु में परिवर्तित कर देती है पर धन्य है वो संसार में भ्रमण करने वाले लोग जो आप सन्निध्य में आते ही वह अपने भवों को ''चुलुक प्रमाणं'' चुल्लु भर पानी की भाँति अल्प कर लेते हैं।

मैंने जगत के जीवों से ही नहीं अपितु आगम ग्रन्थों में पढ़ा कि प्रत्येक नदी सरोवरों से निकलती है और जाकर सागर में मिल जाती है लेकिन मैंने एक ऐसी नदी देखी जो सागर से निकलती है दूसरे सागर से मिल कर उपहार लेकर महासागर की ओर प्रयाण कर रही थी।

पूज्य आ.भ. विद्यासागरजी महाराज रूपी सागर से आर्जवसागर रूपी सरिता निकलती है निरंतर 28 वर्षों से निर्वाध बहती जा रही थी, लाखों जीवों के अन्तस के ताप को शान्त करती हुयी वह सरिता रूपी मुनिवर आर्जवसागर आचार्यश्री सीमन्धरसागरजी रूपी सागर के पास स्वपर उपकार हेतु गये और उपहार स्वरूप आ. सीमन्धरसागरजी महाराज ने अपने मन में विचार किया कि यही है वह जो महासागर (मोक्ष) की ओर प्रयाण कर रहे हैं क्यों न हम अपने भार को (आ.पद) इन के कन्धों पर उपहार के रूप में प्रदान कर देता हूँ। पूज्य गुरुदेव के द्वारा बार-2 मना करने के बाद भी चा.च. आचार्यश्री शान्तिसागरजी की परम्परा के आ.

सीमन्धरसागरजी ने आपके मन पर आचार्य पद का (मनभर) बहुत बड़ा भार डाल दिया और आपने मौन पूर्वक इतने बड़े भार को उठा लिया और पू. तपोनिष्ठ वयोवृद्ध चारित्र वृद्ध समाधि साधक को उनकी अन्तिम यात्रा में निर्विकल्प करके सुख पूर्वक समाधि मरण कराया। और आप आचार्य पद का निर्वहन पूर्ण निष्ठा पूर्वक निर्दोष रूप से कर रहे हैं। आपने मोक्षार्थी अल्पवृद्धजनों को भी दीक्षा प्रदान करके बहुत से जीवों को मुक्ति का मार्ग खोल दिया। यह बड़ी सौगात है वास्तविकता में यदि आपको ''हे मोक्षार्थियों के नाथ'' कहकर पुकारूँ तो अतिशयोक्ति नहीं होगी क्योंकि एक आप ही हैं जो जगत के करोड़ों जीवों के प्राणाधार हैं या क्योंकि पंचमकाल में यदि जीवों के प्राण तो वे हैं सम्यग्दर्शन,सम्यग्ज्ञान, सम्यक् चारित्र रूपी प्राण और आप उन प्राणों के जनक या रक्षक हैं। आप ही प्राण नाथ हैं, आप ही प्रेरणा स्रोत हैं, आप ही जिनधर्म के शाश्वत अलंकार हैं। आप हैं तभी तो धर्म की निर्दोष प्रभावना निरन्तर हो रही है। बांसबाड़ा, खांदू कॉलोनी में आपके प्रथम आचार्य पदारोहण दिवस पर भक्तिपूर्वक भावना भाता हूँ कि हे गुरुदेव, हे विधाता, आप सदियों तक जयवंत रहें, सदियों तक ऐसे पूज्य गुरुदेव का गुणगान होता रहे।

नमोस्तु-नमोस्तु-नमोस्तु।

छल, कपट व मायाचार के ध्यान से दुर्गति

-आचार्यश्री आर्जवसागर

आचार्यश्री ने अनुयायियों से कहा कि इस धर्म को आत्मसात करने के लिए मन के कपट को हटा कर अपने विचार, वाणी और क्रियाओं में एकरूपता लानी होगी। जिसकी करनी और कथनी में अंतर होता है, ऐसे व्यक्ति कभी धार्मिक नहीं हो सकते। वे ढोंगी बनकर दूसरों के साथ छल करते हैं। आर्जवसागर जी ने कहा कि मायाचार से कभी किसी की जीत नहीं हो सकती, क्योंकि मायाचार पाप है। उन्होंने बगुला का उदाहरण देते हुए अपनी बातों को और भी स्पष्ट किया। उन्होंने कहा- बगुला मछली पकड़ने के लिए एक पैर पर खड़ा होकर ध्यान करने का ढोंग करता है। इस तरह का भाव रखनेवाले कभी परमात्मा पद को प्राप्त नहीं कर सकते। मुख में राम बगल में छुरी वाला रावण का ध्यान मायावृत्ति से उसे नरक गति की ओर ले गया लेकिन संसार से विरक्ति ले वीतरागी बन शुद्धात्मा को ध्याने वाले राम परमात्मा के पद को प्राप्त हो गये। अतः बाहरी क्रिया रूप ऐक्शन वाला ध्यान कोई कार्यकारी नहीं; आत्म कल्याण हेतु हमें अपने अभिप्राय रूप इन्टेशन को शुद्ध बनाना आवश्यक है तभी सच्चा ध्यान हो सकेगा।

साभार : आर्जव-वाणी

महावीराचार्यप्रणीतः
गणितसारसंग्रहः

गतांक से आगे.....

अनुवादक : प्रो. एल.सी. जैन

त्र्यधिका सप्ततिरस्मात्सपञ्चपञ्चाशदपि च सा द्विगुणा ।
सप्तकृतिः सचतुष्का सप्ततिरेकोनविंशतिद्विशतम् ॥७०॥
हारा निरूपिता अंशा एकाद्येकोत्तरा अमून् । प्रक्षिप्य फलमाचक्ष्व भागजात्यब्धिपारग ॥७१॥

अत्रांशोत्पत्तौ सूत्रम्—

एकं परिकल्प्यांशं तैरिष्टैः समहरांशकान् हन्यात् ।
यद्गुणितांशसमासः फलसदृशोंऽशास्त एवेष्टा ॥७२॥

एकांशवृद्धोनां राशीनां युतावंशाद्धारस्याधिक्ये सत्यंशोत्पादक सूत्रम्—

समहारैकांशकयुतिहृतयुत्यंशोंऽश एकवृद्धीनाम् ।
शेषमितरांशयुतिहृतमन्यांशोऽस्त्येवमा चरमात् ॥७३॥

---

१ B प्रोत्तीर्णगणितार्णव ।
२ B सदृशवृद्ध्यंशराशीनां अंशोत्पादक सूत्रम् ।

अंश १ से आरम्भ होकर उत्तरोत्तर क्रमवार १ द्वारा बढ़ते चले जाते हैं । इस सब भिन्नों को जोड़कर, हे भिन्न रूपी महासागर के उसपार पहुँचनेवाले, योगफल को बतलाओ ॥६७-७१॥

जब भिन्नों के हर तथा योग दिये गये हों तो अंश निकालने के लिये नियम—

सब दिये गये हरों के सम्बन्ध में अंश को 'एक' बनाओ; तब किसी भी तरह चुनी हुई संख्याओं द्वारा साधारण हरों में लाये गये अंशों को गुणित करो । यहां वे संख्यायें चाहे हुए अंशों में बदल जाती हैं, जिनका योग संबंधित भिन्नों के योग के बराबर होता है ॥७२॥

जब भिन्नों के योग का हर अंश से बड़ा हो और अंश उत्तरोत्तर एक द्वारा बढ़ते चले जाते हों, तो ऐसे भिन्नों के सम्बन्ध में अंशों के निकालने के लिये नियम—

सम्बन्धित भिन्नों के दिये गये योग को तथा जिनके अंश 'एक' होते हैं ऐसे भिन्नों को साधारण हरों में प्रह्रासित कर लिया जाता है । भिन्नों के दिये गये योग को ऐसे भिन्नों के योग द्वारा भाजित करने से प्राप्त भजनफल उन अंशों में से प्रथम चाहा हुआ अंश बन जाता है । इसके पश्चात् के इष्ट अंश उत्तरोत्तर एक द्वारा बढ़ते चले जाते हैं और जिन्हें निकाला जा सकता है । इस भाग में प्राप्त शेषफल को समान हर वाले अन्य अंशों द्वारा विभाजित करने पर, परिणामी भजनफल दूसरा चाहा हुआ अंश बन जाता है जब कि वह प्रथम में जो कि पहिले ही प्राप्त हो चुका है, जोड़ दिया जाय । इस तरह अंत तक प्रश्न का साधन करना पड़ता है ॥७३॥

---

(७२) सूत्र ७४ के प्रश्न को हल करने से यह नियम स्पष्ट हो जावेगा । यहाँ प्रत्येक दिये गये हर के सम्बन्ध मेंअंश एक मान लिया जाता है; इस तरह हमें $\frac{१}{३}$, $\frac{१}{१०}$, $\frac{१}{१२}$ प्राप्त होते हैं जो एक से हरों में प्रह्रासित किये जाने पर $\frac{४०}{१२०}$, $\frac{१२}{१२०}$, $\frac{१०}{१२०}$ हो जाते हैं । जब अंशों को क्रमवार २, ३ और ४ से गुणित करते हैं तो इस तरह प्राप्त गुणनफलों का योग दिये गये योग का अंश (८७७) हो जाता है । इसलिये, २, ३, और ४ चाहे हुए अंश हैं । आलोकनीय है, कि इस दिये गये योग का हर उतना है जितना कि भिन्नों का साधारण हर है ।

(७३) इस नियम के अनुसार ७४ वीं गाथा का प्रश्न इस प्रकार साधित होता है—

अत्रोद्देशकः

नवकदशैकादशहृतराशीनां नवतिनवशतीभक्ता । र्ब्यूनाशीत्यष्टशती संयोगः केंऽशकाः कथय ।।७४।।

छेदोत्पत्तौ सूत्रम्—

रूपांशकराशीनां रूपाद्यास्त्रिगुणिता हराः क्रमशः ।
द्विद्वित्र्यंशाभ्यस्तावादिमचरमौ फले रूपे ।।७५।।

उदाहरणार्थ प्रश्न

९, १० और ११ द्वारा क्रमशः विभाजित की गईं कुछ संख्याओं का योग ८७७ भाजित ९९० है। बतलाओ कि भिन्नों को जोड़ने की इस क्रिया में अंश क्या क्या हैं ? ॥७४॥

चाहे हुए हरों को निकालने के लिये नियम—

'एक' अंश वाली विभिन्न भिन्नीय राशियों का योग जब 'एक' हो, तब चाहे हुए हर एक से आरम्भ होकर क्रमवार, उत्तरोत्तर ३ से गुणित किये जाते हैं, इस तरह प्राप्त प्रथम और अंतिम हर फिर से क्रमशः २ और $\frac{३}{२}$ द्वारा गुणित किये जाते हैं ।।७५।।

प्रत्येक दिये गये हरो के सम्बन्ध में अंश को एक मानकर तथा भिन्नों को समान हरों में प्रह्लासित करने पर $\frac{११०}{९९०}$, $\frac{९९}{९९०}$ और $\frac{९०}{९९०}$ प्राप्त होते हैं। दिये गये योग $\frac{८७७}{९९०}$ को इन भिन्नों के योग $\frac{२९९}{९९०}$ द्वारा विभाजित करने पर हमें भजनफल २ प्राप्त होता है जो प्रथम हर सम्बन्धी अंश है। इस भाग में प्राप्त शेष, २७९, को शेष माने हुए अंशों के योग १८९ द्वारा विभाजित करते हैं जिससे भजनफल १ प्राप्त होता है। इस भजनफल १ को प्रथम भिन्न के अंश २ में जोड़ने पर द्वितीय हर सम्बन्धी अंश प्राप्त हो जाता है। इस दूसरे भाग के शेष ९० को अंतिम भिन्न के माने हुए अंश ९० के द्वारा विभाजित करते हैं, और प्राप्त भजनफल १ को जब पिछले भिन्न के अंश ३ में जोड़ते हैं तब अंतिम हर का अंश प्राप्त होता है। इसलिये, वे भिन्न, जिनका योग $\frac{८७७}{९९०}$ है, ये हैं:—$\frac{२}{९}$, $\frac{३}{१०}$ और $\frac{४}{११}$.

यहाँ इस तरह उत्तरोत्तर निकाले गये अंश क्रमबद्ध दिये गये हरों के सम्बन्ध में चाहे हुए अंश बन जाते हैं। बीजीय रूप से भी, तीन भिन्नों का योग—

$\frac{बसक + (क+१) अस + (क+२) अब}{अबस}$ है और हर अ, ब और स हैं। इनके अंश इस विधि से क, क + १ और क + २ सरलता से निकाले जा सकते हैं।

(७५) उपर्युक्त प्रदर्शित रीति द्वारा प्रश्न को हल करने से यह ज्ञात होगा कि जब न भिन्न हों, तो प्रथम और अन्तिम भिन्न को छोड़कर (न − २) पद गुणोत्तर श्रेढि में होते हैं जिसका प्रथमपद $\frac{१}{३}$ और साधारण निष्पत्ति (common ratio) $\frac{१}{३}$ होती है। (न − २) पदों का योग

$\frac{१}{३}\left\{१-\left(\frac{१}{३}\right)^{न-२}\right\}/\left(१-\frac{१}{३}\right)$ होता है जो प्रह्लासित करने पर $\frac{१}{२}-\frac{१}{२}\cdot\frac{१}{३^{न-२}}$

अथवा, $\frac{१}{२}-\frac{१}{२/३}\times\frac{१}{३^{न-१}}$ के तुल्य होता है। इससे स्पष्ट है कि जब प्रथम भिन्न $\frac{१}{२}$ हो तो अन्तिम भिन्न $\frac{१}{\frac{२}{३}\cdot३^{न-१}}$ को इस अन्तिम फल में जोड़ने पर योग १ हो जाता है। इस सम्बन्ध में, न पदों वाली

माननीय सदस्यगण, गणित सार संग्रह के विषयान्तर्गत मौखिक सुझाव प्राप्त हुए हैं कि आंशिक विषय का लम्बे अंतराल में पढ़ने से निरंतरता नहीं बनती है। साथ ही रुचता नहीं है। अत: इच्छुक पाठकों को इंटरनेट के माध्यम से साफ्टकॉपी प्रकाशक के मध्यम से उपलब्ध करवाया जाना सार्थक होगा। अतएव कृपया उक्त सुझाव की प्रतिक्रिया/सहमति से अवगत कराने का यह अंतिम प्रकाशनार्थ अनुरोध है।

प्रकाशक

पारसचन्द से बने आर्जवसागर

गतांक से आगे......... –आर्यिकारत्न 105 श्री प्रतिभामति माता जी

एलोरा क्षेत्र दर्शनः–

कोपरगांव के चातुर्मास के उपरान्त गुरुवर आर्जवसागर जी का विहार उत्तर दिशा की ओर हुआ। यवला गाँव होते हुए नाँदगाँव पहुँचे। वहाँ पर मंगल प्रवचन भी दिया और पाठशाला की भी शुरुआत करवाई। फिर वहाँ से एलोरा गये। वहाँ पर पहाड़ी की गुफाओं में स्थित अनेक जिन प्रतिमाओं का एवं मनोज्ञ कलायुक्त श्री पार्श्वनाथ भगवान का दर्शन किया। गाँव के गुरुकुल में स्थित मन्दिर में ठहरकर प्रवचन आदि के माध्यम से धर्मप्रभावना की।

पारोला में सिद्धचक्र विधानः–

पश्चात् मुनिश्री ने सेवूर, कन्नड़ आदि गाँव से विहार करते हुए पारोला नगर में प्रवेश किया। श्रावकों के नम्र निवेदन से यहाँ मुनिश्री के सान्निध्य में सिद्धचक्र महामण्डल विधान का आयोजन हुआ। अनेक इन्द्र–इन्द्राणियाँ वीतराग सिद्धप्रभु की अर्चना में सम्मिलित हुये। मुनिश्री ने विशेष प्रवचन दिये और एलोरा से संघ में सम्मिलित हुए एलोरा के व्रती श्री चुन्नीलाल कासलीवाल ने मुनिश्री से निवेदन किया कि हमें भी आप मोक्षमार्गी बनायें। फिर मुनिश्री ने उनको क्षुल्लक दीक्षा दी और क्षु. अर्पणसागरजी नाम रखा था। साथ ही, बाल संस्कार हेतु जैन पाठशाला भी स्थापित की।

बावनगजा चूलगिरि सिद्धक्षेत्र दर्शनः–

पारोला से अम्बलनेर आदि गाँव से विहार करते हुए मुनिश्री आर्जवसागरजी सिद्धक्षेत्र बावनगजा पर पहुँचे। जहाँ से साढ़े पाँच करोड़ मुनि एवं रावण के पुत्र इन्द्रजीत और कुम्भकर्ण मोक्ष गये हैं ऐसे चूलगिरि पर्वत का दर्शन किया और विशाल 84 फुट ऊँची श्री आदिनाथ प्रतिमा का दर्शन कर आनन्दित हुये। पश्चात् तलहटी में स्थित 20 मन्दिरों में विराजित प्राचीन प्रतिमाओं का दर्शन किया।

बाकानेर में महावीर जयंतीः–

पश्चात् बावनगजा से विहार करके मुनिश्री सिंघाना, मनावर आदि गाँव से होते हुए बाकानेर आये। वहाँ पर भगवान महावीर स्वामी की जन्म जयन्ती पर्व विमानोत्सव के साथ मनाया गया। पश्चात् मुनिश्री का प्रवचन हुआ तथा मुनिश्री की 16 वाँ दीक्षा जयन्ती दिवस भी मनाया गया।

सिद्धक्षेत्र सिद्धवर कूट दर्शनः–

तत्पश्चात् मुनिश्री का पूर्व दिशा की ओर विहार हुआ और धर्मपुरी, धामनोद, महेश्वर, मण्डलेश्वर, बड़वाह आदि गाँव में धर्मप्रभावना करते हुए सिद्धक्षेत्र सिद्धवरकूट में मंगल प्रवेश हुआ। वहाँ पर सभी मन्दिरों का दर्शन किया। नर्मदा नदी के किनारे स्थित यह सिद्धक्षेत्र बहुत ही मनोरम दृश्यपूर्ण लगता है। यहाँ से दो चक्री, दश कामकुमार आदि आठ करोड़ मुनिराज मोक्ष गये हैं। ऐसे इस पावन भूमि का कण–कण पवित्र है।

इन्दौर गोम्मटगिरि दर्शनः–

मुनिश्री का मंगल विहार सिद्धवरकूट से इन्दौर महानगर की ओर हुआ। पहले गोम्मटगिरि का दर्शन किया। त्रिकाल चौबीसी एवं बाहुबली भगवान दर्शन करके कालानी नगर, छत्रपति नगर गये। छत्रपति नगर में

ऐ.निशंकसागरजी आगवानी के लिये आये। मन्दिर का दर्शन कर तत्त्वचर्चा आदि हुई। पश्चात् विजयनगर, पलासिया, कंचन बाग, समवशरण मन्दिर (श्राविका व उदासीन आश्रम), इन्द्रभवन, काँच मन्दिर, तिलक नगर आदि स्थानों पर प्रवचन आदि से धर्मप्रभावना करते हुए धार्मिक पाठशालाएँ भी खुलवाईं।

पंचबालयति में शिलान्यासः- पंचबालयति मन्दिर में मन्दिर की वेदी हेतु मुनिश्री के सान्निध्य में शिलान्यास किया गया था।

पलासिया में कल्पद्रुम विधानः-

इन्दौर के पलासिया मन्दिर में मुनिश्री आर्जवसागरजी के सान्निध्य में कल्पद्रुम महामण्डल विधान हुआ था जिसमें बहुत लोगों ने इन्द्र-इन्द्राणी बनकर प्रभु की अर्चना की। विधान के बीच में मुनिश्री का प्रवचन होता रहा और समाज के सभी लोगों ने चातुर्मास के लिए निवेदन भी किया।

हाटपीपल्या विहारः-

विधान के उपरान्त मुनिश्री ने तिलकनगर होते हुए हाटपीपल्या की और विहार किया। हाटपीपल्या के श्रावक लोग व मुनि दीक्षा के भाव रखने वाले ब्रह्मचारी भी विहार में साथ चले। बाजे के साथ मुनिश्री का मंगल प्रवेश हाटपीपल्या नगर में हुआ। धार्मिक पाठशाला शुरू करवाई और कुछ दिन के प्रवास में प्रवचन आदि के माध्यम से धर्मप्रभावना की। समाज के सभी लोगों ने मुनिश्री के चरणों में चातुर्मास के लिए नम्र निवेदन करते हुए श्रीफल अर्पित किये।

आष्टा और सीहोर की ओर विहारः-

पश्चात् मुनिश्री का विहार सोनकच्छ तरफ हुआ। सोनकच्छ में प्रवचन आदि हुआ। पश्चात् वहाँ से आष्टा गये। आष्टा में भी प्रवचन आदि से धर्मप्रभावना करते हुए सीहोर गये। वहाँ पर मुनिश्री वैराग्यसागरजी आगवानी के लिए आये। वहाँ मुनिश्री आर्जवसागरजी के ससंघ सान्निध्य में सिद्धचक्र महामण्डल विधान प्रारम्भ हुआ। भक्तों ने इस विधान में उत्साहपूर्वक लाभ लिया तथा मुनिश्री का युगल प्रवचन भी होता था। मुनिश्री के धर्म प्रभाव से प्रभावित होकर समाज के सब लोगों ने चातुर्मास के लिए नम्र निवेदन किया। लेकिन मुनिश्री का मंगल विहार भोपाल राजधानी की ओर हो गया।

बैरागढ़, जैन नगर मन्दिर दर्शनः-

मुनिश्री ने ससंघ प्रथम बार भोपाल में बैरागढ़ मन्दिर की भव्य मूर्तियों का दर्शन किया और जैन नगर में प्रवेश किया वहाँ भी मन्दिर का दर्शन किया। म.प्र. की राजधानी भोपाल नगर में मुनिश्री आर्जवसागरजी का यह मंगल प्रवेश बहुत ही भक्ति भाव से हर्षोल्लास के साथ श्रावकों ने आगवानी पूर्वक किया। टी.टी. नगर (भोपाल) का वाद्य ध्वनि के साथ बहुत ही मंगलमय भासित हो रहा था।

टी.टी. नगर में 2004 का वर्षायोगः-

टी.टी. नगर के भक्तों के कई बार किये गये निवेदन के पश्चात् मुनिश्री आर्जवसागर जी महाराज का ससंघ चातुर्मास टी.टी. नगर(टीन शेड मन्दिर) को मिला। शुभ तिथि शुभ मुहुर्त पर चातुर्मास कलश स्थापना का कार्यक्रम हुआ। चातुर्मास में मुनिश्री श्रावकों के लिए रत्नकरण्डक श्रावकाचार पढ़ाया एवं संघस्थ लोगों के लिए सर्वार्थसिद्धि और कातन्त्ररूपमाला (पंच संधि प्रकरण) पढ़ायी। फिर सोलहकारण, दशलक्षण आदि पर्व

संगीतमय पूजन के साथ सामूहिक रूप से मनाया गया। जिसमें सर्विस करने वाले, कॉलेज में पढ़ने वाले व पढ़ाने वाले ऐसे बहुत से लोगों ने इस मंगल महापर्व सोलहकारण में भाग लिया।

सर्वोदय सम्यग्ज्ञान शिक्षण शिविर प्रारम्भः-

मुनिश्री के सान्निध्य में टी.टी. नगर में सर्वोदय सम्यग्ज्ञान शिक्षण शिविर का पहली बार प्रारम्भ हुआ, जिसमें आगरा के पं. रतनलालजी बैनाड़ा ने अपने शिक्षक समूह को प्रेषित किया। प्रतिदिन तीनों समय विभिन्न कक्षायें चली थीं।

2 अक्टूबर को मुख्यमंत्री का आगमनः-

वर्षायोग के अन्तर्गत 2 अक्टूबर को कवि सम्मेलन रखा गया था। जिसमें म.प्र. के तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री बाबूलाल गौर ने भी पधारकर मुनिश्री आर्जवसागरजी का आशीर्वाद लिया। पश्चात् मुनिश्री का प्रवचन भी सुना। मुनिश्री ने मुख्यमंत्री को अहिंसा परमो धर्म हेतु पशुधन बचाने, हिंसा रोकने व डिसेक्शन बन्द करने हेतु कहा। उन्होंने दूसरे दिन ही डिसेक्शन बन्द करने हेतु हस्ताक्षर कर दिये और अनेक न्यूज पेपरों में समाचार प्रकाशित हुआ। अब स्कूल आदि शिक्षण क्षेत्रों में डिसेक्शन बन्द इस समाचार को देखकर सभी लोग आनन्दित हो गये। मुख्यमंत्री के आगमन से बहुत बड़ा लाभ हुआ और कुछ दिनों में मेडीकल कॉलेज हेतु जमीन भी सरकार की ओर से प्राप्त हुयी। इस कवि सम्मेलन में तत्कालीन परिवाहन मंत्री श्री उमाशंकर गुप्ता, श्री हुकुमचन्द जी सांवला, कवि चन्द्रसेन एवं उनके साथी आदि लोग भी मंच पर उपस्थित थे।

विद्वत् संगोष्ठीः-

परम सौभाग्य एवं हर्ष के मंगल अवसर पर श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, न्यूमार्केट टी.टी. नगर, भोपाल में द्वि दिवसीय विद्वत् संगोष्ठी का प्रभावक आयोजन दिनांक 6 एवं 7 नवम्बर 2004 को **'वर्तमान परिपेक्ष में षोडसकारण भावनाओं का व्यवहारिक रूप'** विषय पर हुआ। जिसमें श्री निरंजनलाल बैनाड़ा आगरा, डॉ. श्री रतनचन्द्र जैन, भोपाल, डॉ. श्री जयकुमार जी जैन मुजफ्फरनगर, डॉ. श्री एल.सी. जैन जबलपुर, डॉ. श्री श्रेयांशकुमारजी बडौत, प्राचार्यश्री निहालचन्दजी बीना, प्राचार्य श्री लालचन्द्र राकेश गंजबासौदा, डॉ. डी.पी. सिंह, कुलपति वि.वि. सागर, श्री सुरेश जैन आई.ए.एस. भोपाल आदि विद्वत् लोग अपने दिये गये विषयों पर अनुसंधनात्मक आलेखों का वाचन एवं शंका समाधान हेतु पधारे। साथ ही प.पू. धर्मप्रभावक गुरुवर मुनिश्री आर्जवसागरजी महाराज के समीक्षात्मक उद्‌बोधन व प्रवचनों का शुभअवसर भी प्राप्त हुआ। जिसमें भारी संख्या में श्रावकों ने ज्ञान की श्री वृद्धि कर पुण्य लाभ लिया।

पश्चात् वर्षायोग के निष्ठापन के अन्तिम चरण में पिच्छि का परिवर्तन का कार्यक्रम हुआ एवं कण्ठपाठ प्रतियोगिता कार्यक्रम भी हुआ एवं विजयी प्रतियोगिताओं को पुरस्कारित किया गया। इस प्रकार सन् 2004 का यह पावन वर्षायोग (4 महीने का योग) सानंद सम्पन्न हुआ।

एशबाग में पंच कल्याणकः-

धर्मप्रभावक अध्यात्म योगी मुनिश्री आर्जवसागरजी के ससंघ परम सान्निध्य में उमराव बाग दुल्हा के बड़े मैदान में श्रीमज्जिनेन्द्र पंचकल्याणक एवं त्रय गजरथ महोत्सव बहुत ही हर्षोल्लास के साथ सानंद सम्पन्न हुआ। जिसमें वहाँ के दो मंजिला जिनालय की मूर्तियाँ एवं अन्य जगह की मूतियाँ भी प्रतिष्ठित करायी गयी थी।

यहाँ सूरत से आहुरानगर की मानस्तम्भ की प्रतिमायें भी आयी थीं। मुनिश्री सुधासागरजी के पास से समाचार लेकर वहाँ के लोग आये थे और इसी कार्यक्रम में भोपाल शंकराचार्य नगर के ब्र. जितेन्द्र भैया ने मुनिश्री से आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत ग्रहण किया था। मुनि आर्जवसागरजी से मिलने के लिए मुनिश्री विशुद्धसागरजी भी ससंघ गजरथ के दिन पधारे थे। साथ ही आर्यिका श्री मृदुमति के संघ की आर्यिकाएँ भी उपस्थित होती रहीं।

पश्चात् मुनिश्री ने वहाँ से ससंघ विहार करके नेहरु नगर, जवाहर चौक, शाहपुरा, नयापुरा, पद्मनाभ नगर, चौक मन्दिर, मंगलवारा और पास के ही क्षेत्र समसगढ़ का दर्शन किया। बहुत पुराने शान्ति, कुन्थु, अरहनाथ भगवान के जिन बिम्बों व जिनालय का दर्श पाकर मन प्रफल्लित हो गया। पश्चात् भोजपुर क्षेत्र का भी दर्शन किया। वहाँ पर कुछ दिन ठहरकर शान्ति का आनन्द लिया और मंडीद्वीप इत्यादि स्थानों पर जिन दर्शन, प्रवचन, धार्मिक पाठशाला आदि के माध्यम से धर्म प्रभावना की।

पंचशील नगर में समवशरण विधान:-

मुनिश्री आर्जवसागरजी के ससंघ सान्निध्य में पंचशील नगर के मन्दिर में श्री समवशरण महामण्डल विधान का आयोजन किया गया। बहुत लोगों ने इन्द्र-इन्द्राणी बनकर जिनवर प्रभु की भक्ति की। मंच पर परिवाहन मंत्री उमाशंकर गुप्ता गुरुवर के दर्शनार्थ पधारे मुनिश्री ने भी प्रवचन आदि के माध्यम से भक्ति की महिमा बताई। पश्चात् मुनिश्री का विहार हाबीबगंज की ओर हुआ। थोड़े समय ठहरकर फिर शंकराचार्य नगर श्रावकगणों के निवेदन से वहाँ पधारे और वहाँ सिद्धचक्र महामण्डल विधान मुनिश्री के सान्निध्य में फाल्गुन अष्टान्हिका महापर्व पर सम्पन्न हुआ। जिसमें आनन्द के साथ समस्त नर-नारी बाल, युवा, वृद्ध सभी लोगों ने इस सिद्धचक्र महामण्डल विधान में भाग लिया।

चौक मंदिर में महावीर जयंती:-

भोपाल में श्री दि. जैन चौक मन्दिर की कमेटी के भव्यों द्वारा विशेष निवेदन किये जाने पर महावीर जयन्ती के विशाल जुलूस एवं सामूहिक आयोजन में मुनिश्री को आमंत्रित किया गया। इसमें मुनिश्री का पावन सान्निध्य रहा एवं सामूहिक सभा में विशेष प्रवचन दिये। इसी संदर्भ में मुनिश्री आर्जवसागरजी के 17 वे दीक्षा दिवस को भक्तिभाव पूर्वक मनाने का भोपाल वालों को सौभाग्य मिला।

अशोका गार्डन में पंचकल्याणक:-

भोपाल के अशोका गार्डन में त्रय गजरथ पंचकल्याणक महामहोत्सव सम्पन्न हुआ। इसमें जिनालय की द्वितीय, तृतीय मंजिल सम्बन्धी प्रतिमाओं की प्रतिष्ठा करायी गयी। यह पंचकल्याणक विशाल ग्राउण्ड में हुआ था। इसमें श्री उमाशंकर गुप्ता आदि नेतागण भी पधारे थे जिन्होंने मुनिश्री के समक्ष उद्बोधन में कहा कि अगर जैन न होते तो हम अहिंसा का संदेश कैसे सीख पाते? जैन श्रावक इतनी अहिंसा पालते हैं कि चीटी को भी बचाकर चलते हैं, रात्रि भोजन नहीं करते हैं, पानी छानकर पीते हैं और फिर दिगम्बर साधु की चर्या कितनी महान होती होगी। यह पंचकल्याणक पं. गुलाब चन्द पुष्प और पं. जयकुमार निशान्त एवं ब्र. नितिन भैया के प्रतिष्ठाचार्यत्व में समाज के निवेदन से सानन्द सम्पन्न हुआ।

पश्चात् श्रुतपञ्चमी पर्व बड़े हर्षोल्लास के साथ दि. जैन मन्दिर अशोका गार्डन भोपाल में सामूहिक रूप से मनाया गया। इसमें मुनिश्री द्वारा खोली गयी पाठशालाओं की सम्हाल हेतु जिम्मेदारी समाज को सौंपी गयी।

इस ग्रीष्मकालीन अवसर के दौरान पद्मनाभ नगर दि. जैन मन्दिर में धर्मप्रभावना के साथ थोड़े दिन प्रवास किया था। धार्मिक पाठशाला की शुरुआत की। इसप्रकार करीब 11 महीने तक भोपाल वासियों को मुनिश्री का सान्निध्य मिला। पश्चात् दि.जैन मन्दिर बैरागढ़, अशोका गार्डन, शंकराचार्य नगर के भक्तों के वर्षायोग कराने की भावना निवेदित किये जाने पर भी मुनिश्री का कुराना क्षेत्र दर्शन करते हुए बीनागंज की ओर विहार हो गया। भक्तों की आँखों से भक्ति की अश्रुधारा बहने लगी और मुनिश्री के विहार में बहुत दूर तक भक्तों का आने-जाने का तांता लगा रहा। अशोका गार्डन के श्री राजेन्द्र जैन, सिमेंट वालों का परिवार और उनके साथी लोगों ने मुनिश्री का विहार बीनागंज, राधोगढ़, आरोन तक सम्पन्न करवाया। आरोन की समाज ने मुनि श्री के एक सप्ताह के वास्तव्य में ही वर्षायोग का भरपूर निवेदन किया। वैसे तो अशोकनगर समाज द्वारा पूर्व से ही वर्षायोग का निवेदन किया गया था। फिर वे लोग बीनागंज से ही विहार कराने बहुत लोग शामिल हो चुके थे। मुनिश्री बजरंगगढ़ अतिशय क्षेत्र का दर्शन करते हुए गुना शहर में पधारे। जहाँ मुनिश्री की आगवानी बहुत प्रभावना के साथ सम्पन्न करायी। बड़ी भावना के साथ तीन दिन प्रवचन चले और वर्षायोग हेतु मुनिश्री से निवेदन भी किया गया। फिर अशोकनगर भक्तों की विशेष भक्ति से मुनिश्री का ससंघ मंगल विहार साड़ोरा नगर होते हुए अशोक नगर की ओर हो गया।

क्रमशः.......

ध्यान में बाधक तत्त्वों को जानना जरूरी

-आचार्यश्री आर्जवसागर

प्रवचन करते हुए गुरुदेव आर्जवसागर ने कहा कि ध्यान के लिए बाधक तत्त्वों को जानना जरूरी है। ध्यान सिद्धि में राग, द्वेष और मोह बाधक तत्त्व हैं। ध्यान करने वाले को इसका तत्काल परित्याग कर देना चाहिए। मुनिराज ने संसार और चेतन आत्मा के बारे में चर्चा करते हुए कहा कि चेतन आत्मा का ध्यान शाश्वत सत्य की ओर ले जाने वाला है। संसार से मन को हटाकर आत्मा का ध्यान करना चाहिए। उन्होंने मन की एकाग्रता पर प्रकाश डालते हुए कहा कि जब ध्यान में मन नहीं लगता तब योगीजन प्रभु से प्रार्थना करते हैं कि हे प्रभु मेरे मन को पवित्र करें। मन को समझाते हैं। यदि इससे भी बात नहीं बनती तो शरीर को तप में लगा कर मन को दंड देते हैं। आर्जवसागरजी ने मन की एकाग्रता पर चर्चा करते हुए कहा कि जैसे सूर्य की किरणें कागज पर पड़ती हैं, तो वह जलता नहीं लेकिन यदि किरणों को लेंस के माध्यम से एक बिंदु पर केंद्रित किया जाता है, तो कागज जलने लगता है। ठीक इसी तरह जब मन की एकाग्रता संसार के बाह्य पदार्थों से हटकर पूर्ण रूपेण आत्मा पर केंद्रित हो जाती है, जो आत्मा में विद्यमान कर्म रूपी ईधन जलने लगता है। दिगम्बर संत ने अपनी बातों को और भी स्पष्ट करते हुए कहा कि हमारा जीवन कब पानी की बूंद की तरह समाप्त होगा? कहा नहीं जा सकता। जीवन में कभी धूप, कभी छांव होती रहती है। इसलिए जीवन में कल्पनाओं की उड़ान न भरकर पापवृत्ति से बचना चाहिए।

साभार : आर्जव-वाणी

गरिमापूर्ण हैं हमारे आचार्य परमेष्ठी

-मुनिश्री 108 नमितसागरजी

गुरुवः पान्तु नो नित्यं, ज्ञान दर्शन नायकाः।
चारित्रार्णव-गम्भीरा, मोक्षमार्गोपदेशकाः॥

यह सामाजिक परम्परा है कि महापुरुषों के महत्वपूर्ण क्षणों को हम प्रेरणास्वरूप सामूहिक रूप से मनाते हैं, जिससे हमें शिक्षा मिलती है कि हम भी उन जैसे बनें। बस इसी कारण वश आप सभी लोग यहाँ एकत्रित हुए हैं। आज प.पू. गुरुवर आचार्यश्री 108 आर्जवसागरजी महाराज का आचार्य पद ग्रहण करने के बाद एक वर्ष पूरा हुआ है। इसी उपलक्ष में आप सभी ने पूजा अर्चा भी की गयी है और गुणगान भी गाये हैं। उसी निमित्त से मैं भी अपने मनोगत भाव व्यक्त करता हूँ।

आचार्य महाराज के बारे में कुछ अपने विचार व्यक्त करूँ इससे पहले इस पक्ष का स्वरूप, गरिमा व स्थान के बारे में कुछ जानेंगे ताकि मेरे द्वारा व्यक्त विषय को आप समझ सकेंगे और इसके महत्त्व को भी जान सकेंगे। वैसे तो सामान्य से आप लोग अच्छी तरह से परिचित होंगे कि आचार्य कौन होते हैं लेकिन उसकी गरिमा व कर्त्तव्य के विषय में जानकार नहीं होंगे। इसके लिये मैं कुछ अपने विचार आगम अनुरूप व्यक्त करता हूँ।

पहले हम आचार शब्द के बारे में जानेंगे- सागार धर्मामृत में कहा है- अपनी शक्ति के अनुसार निर्मल किये गये सम्यग्दर्शन आदि में जो यत्न किया जाता है उसे आचार कहते हैं और मुनि इन पांच प्रकार के आचार-निरतिचार स्वयं पालते हैं तथा इन पाँच आचारों में दूसरों को भी प्रवृत्त करते हैं तथा शिष्यों को उपदेश देते हैं। उन्हें आचार्य कहते हैं। साधारण भाषा में जो मुनियों के दीक्षा-शिक्षा दायक हैं और उनके दोष निवारक तथा जिनमें अन्य विशेष गुण हैं उन्हें आचार्य कहते हैं। ये वीतरागी होने के कारण णमोकार मंत्र में तीसरे स्थान पर विराजमान हैं या यों कहो कि णमोकार मंत्र में चेतन परमेष्ठी के स्वरूप में प्रथम स्थान पाते हैं अतः आज ये सर्वोत्कृष्ट पद पर विराजमान हैं। अब हम आचार्य परमेष्ठी की विशेषताओं पर नजर डालेंगे कि आचार्य कैसे होने चाहिये। धवला पुस्तक एक में लिखा है कि आचार्य का स्वरूप कैसा हो?

प्रवचन रूपी समुद्र के जल के मध्य में स्नान करने से अर्थात् परमात्मा के परिपूर्ण अभ्यास और अनुभव से जिनकी बुद्धि निर्मल हो गई है, जो निर्दोष रूप से छह आवश्यकों का पालन करते हैं, जो मेरु के समान निष्कम्प हैं, जो शूरवीर हैं, जो सिंह के समान निर्भीक हैं अर्थात् श्रेष्ठ हैं, देश और कुल जाति से शुद्ध हैं, सौम्य मूर्ति हैं, अंतरग और बहिरंग परिग्रह से रहित हैं, आकाश के समान निर्लेप हैं। ऐसे आचार्य परमेष्ठी होते हैं। और जो संघ को दीक्षा, शिक्षा और प्रायश्चित देने में कुशल हैं, जो परमागम के अर्थ में विशारद हैं, जिनकी कीर्ति सब जगह फैल रही है, जो आचरण, निषेध और व्रतों की रक्षा करने वाली क्रियाओं में निरन्तर उद्यत हैं, उन्हें आचार्य परमेष्ठी समझना चाहिये।

मूलाचार में भी कहा है कि जो दर्शन, ज्ञान, चारित्र तप और वीर्य इन पाँच आचारों का स्वयं पालन करते हैं और दूसरे साधुओं को पालन कराते हैं उन्हें आचार्य परमेष्ठी कहते हैं।

मुझे यह भाव व्यक्त करते हुये हर्ष है कि प.पू. 108 आचार्य परमेष्ठी श्री आर्जवसागर जी में उपरोक्त विशेषतायें अनुभव में आती हैं जो आगमोक्त हैं। अब हम आचार्य परमेष्ठी के मूल गुणों के बारें में जानेंगे।

आचार्य परमेष्ठी के 36 मूल गुण होते हैं। जैसे तत्त्वार्थ सूत्र के 9वें अ. 19 व 20वें सूत्र में

1. 12 तप- अंतरंग- प्रायश्चित्त, विनय, वैयावृत्ति, स्वाध्याय, व्युत्सर्ग और ध्यान।
   बहिरंग- अनशन, अवमौदर्य, वृत्तिपरिसंख्यान, रसपरित्याग, विविक्तशय्यासन और कायक्लेश।
2. षट् आवश्यक- प्रतिक्रमण, सामायिक, स्तवन, वंदना, प्रत्याख्यान और कायोत्सर्ग।
3. आचार 5- दर्शनाचार, ज्ञानाचार, चारित्राचार, तपाचार व वीर्याचार।
4. धर्म- 10- क्षमा, मार्दव, आर्जव, शौच, सत्य, संयम, तप, त्याग, आकिन्चन्य और ब्रह्मचर्य।
5. गुप्ति- 3- मनोगुप्ति, वचन गुप्ति और काय गुप्ति।

इन गुणों का विश्लेषण हमारे गुरु के सान्निध्य में रहकर देखें तो उनमें ये सभी गुण उपलब्ध हैं। हमें प्रति दिन षट् आवश्यकों का और मुनि के मूल 28 गुणों का बहुत अच्छे से पालन करवाते हैं। ये ही संस्कार मोक्षमार्ग में महत्वपूर्ण हैं।

अब हम विचार करते हैं कि आचार्य पद ग्रहण करने की क्या आवश्यकता है, क्यों आचार्य पद ग्रहण करना चाहिये? पंच परमेष्ठी में तो दो परमात्मा हैं और तीन मोक्षमार्ग में स्थित चेतन परमेष्ठी हैं। वर्तमान में हम इन में से दो परमेष्ठी के माध्यम से अपना कल्याण करते हैं। आचार्य परमेष्ठी पहले मुनि होते हैं फिर आचार्य बनते हैं अर्थात् यह एक ऐसा पद है जो संघ संचालन के अग्रणी रूप है।

मोक्षमार्ग में जो भव्य जीव आना चाहते हैं वे कैसे इस मार्ग में प्रवेश पायेंगे, कैसे उनको इस मार्ग का ज्ञान होगा, कैसे इस मार्ग में दोष आदि लगते हैं तो कैसे उनका निवारण होगा। ये प्रश्न उपस्थित होते हैं। इन प्रश्नों के उत्तर के लिये मैं कहूँगा कि एक ऐसे व्यक्तित्व की आवश्यकता होती है है जो इन प्रश्नों के सुलझाने सक्षम हो। अर्थात् आचार्य रूप व्यक्तित्व की आवश्यकता है, या यू कहें कि चतुर्विध संघ के परिचालन हेतु संघटित कर उनके कल्याण के लिये आचार्य का एक महत्वपूर्ण स्थान है।

अब हम विचार करते हैं कि हमारे गुरु कैसे हैं जो इन सब आवश्यकताओं की पूर्ति करते हैं।

1. ये बहुत योग्य गुरु के शिष्य है जो वर्तमान में एक विशाल संघ के नायक हैं।
2. इनको दीक्षित हुए 28 वर्ष हो गये और अनुभव सर्वांगीण है।
3. ये 13 प्रान्तों में निर्भीक रूप से विहार कर चुके हैं। अब तक करीब 20000 कि.मी. विहार हुआ। यदि एवरेज निकालें तो प्रतिदिन 5 कि.मी. आता है। जो आगम अनुकूल परिहार विशुद्धि संयम के धारक साधु करते हैं। मैं भावना भाता हूँ भविष्य में इन्हें यह विशेषता प्राप्त हो।
4. ये बहुभाषीय हैं- इन्हें तमिल, हिन्दी, मराठी व कन्नड़ आदि भाषाओं का ज्ञान है।
5. ये शान्त स्वभावी, धीर-वीर हैं।
6. ये अनुपम व्यक्तित्व के धनी हैं। ये सामायिक-ध्यानस्थ होते हैं तो परमात्मा का स्वरूप ही नजर आता है।
7. इनका ज्ञान अपरिमित है और सबको आकर्षित करने की क्षमता है।

8. गाथायें तो इतनी याद हैं कि किसी भी प्रसंग के 8-10 गाथायें तो सहज ही उदाहरण के साथ सुना देंगे।
9. प्रासंगिक उदाहरण तो असंख्यात होंगे जिससे हम अनुमान लगा सकते हैं कि प्रथमानुयोग पर गहरी पकड़ है।
10. आप चरणानुयोग पर विशेष अधिकार रखते हैं। आपने अनेक लघु ग्रन्थों पर प्राकृत व संस्कृत भाषाओं से हिंदी में पद्यानुवाद किया है।
11. द्रव्यानुयोग के ग्रन्थ तो इन्हें अपने गुरु से संस्कारवत् ही मिल गये हैं।
12. आप पंच मिथ्यात्व व एकान्तवादियों का खण्डन बहुत अच्छी तरह से करते हैं और अपनी ओर आकर्षित भी कर लेते हैं।
13. रस त्याग में आप अग्रणी हैं रस राज अर्थात् नमक को छोड़े हुये करीब तीस वर्ष हो गये शक्कर भी आप तभी से नहीं ग्रहण करते हैं।
14. आप ख्याति लाभ से दूर रहते हैं। यह बात अलग है कि निर्दोषचर्या से धर्म प्रभावना होती है तो अलग बात है।
15. आप व्रतों का आरोपण किसी भव्य के लिये पूर्ण जानकारी लेने के बाद ही करते हैं।
16. आपका साहित्य बाहर कहीं भी उपलब्ध नहीं है। कई नियम लेने वालों को ही उपलब्ध होता है। अब कुछ गुरु के सम्बन्ध में पढ़ीं पंक्तियों के साथ मैं अपने भावों को और दृढ़ करता हूँ।

आचार्य संत की सेवा करने से, द्वार मोक्ष का खुल जाता।
आपके दर्शन करने से, बिगड़ा भाग्य बदल जाता॥
मुक्ति लक्ष्मी स्वयं आती, पाप दूर ही रहता है।
निर्धन भी इनकी कृपा से, धनी बहुत हो जाता है।
सेवा करो इनकी सदा, ये तो पूज्य हमारे हैं
आचार्य के चरण हमें तो, प्राणों से भी प्यारे हैं-2

हमारे गुरुवर श्री आचार्य आर्जवसागरजी महाराज को आचार्य पद एक वर्ष पूर्व इन्दौर के निकट चारित्र चक्रवर्ती आचार्यश्री शान्तिसागरजी महाराज की ही परम्परा के वयोवृद्ध सुयोग्य आचार्यश्री सीमंधरसागर महाराज द्वारा सल्लेखना पूर्व अपने ही कर कमलों द्वारा प्रदान किया गया था ऐसे महान गुरु को साथ जोड़ते हुए अंत में हम अपने विचारों को कहीं पर सुनी कुछ और भी पंक्तियों को कहते हुए विराम देंगे कि-

तुम चरणों की धूलि गुरुवर, जिस प्राणी को मिल जाती।
अटल विश्वास हमारा है, कि उनकी किस्मत ही खुल जाती॥
किस्मत खुली हमारी गुरुवर, बिन मांगे सब कुछ पाया है।
तुम्हारे आशीष से ही तो, जीवन में सच्चा आनन्द आया है॥
क्षमा मूर्ति पूज्य गुरु को, अपना शीश झुकाते हैं।
जियें हजारों साल गुरुवर, हम यही भावना भाते हैं॥-2

卐 卐 卐

इष्टोपदेश

अंक तीस से आगे.....

आचार्यश्री आर्जवसागर जी

36. जिसका मन वह क्षोभ रहित है, तत्त्व विचार में स्थिरता।
ऐसा योगी निर्जन थल में, निष्प्रमाद आसन धरता॥
अपनी आतम के स्वरूप का, चिन्तन नित अभ्यास करे।
शीघ्र मिले शिवपद की मंजिल, ऐसा अथक प्रयास करे॥

37. जैसे-जैसे जहाँ समाता, अनुभव में सु-तत्व महा।
वैसे-वैसे सुलभ प्राप्त हि, ना रुचते हैं भोग वहाँ॥
आत्म द्रव्य की अनुभूति जब, जिस योगी को होती है।
चक्री सम वह भोग संपदा, फीकी पड़ती रोती है॥

38. जैसे जैसे सुलभ भोग वे, नहि रुचते इस आतम को।
वैसे-वैसे अनुभव में सम-रस मिलता शुद्धातम को॥
बिन माँगे वे विषय भोग भी, ना भाते हैं चेतन में।
प्रतिभासित होता है उत्तम-तत्त्व तभी इस चेतन में॥

39. जब जग सारा इन्द्रजाल सम, सार रहित यह लगता है।
तब प्राणी को निज स्वरूपी, बनने को हिय कहता है॥
ऐसी रुचि जब शुद्धातम की, इस आतम में जगती है।
मन बाहर भागे तो आतम, मीन समान तड़फती है॥

40. निर्जन थल पर जिसे ठहरना, उत्तम प्रतीत होता है।
एकान्तवासि आतम अनुभवि, आत्म ध्यान रत होता है॥
अपने किसी कार्य वश जिसको, कुछ वच कहना हो तो भी।
समिति पूर्वक शीघ्र वचन कह, भूले वह इस तन को भी॥

41. आत्म तत्त्व में स्थिर रहने, वाला उत्तम जो योगी।
बोले तो भी नहीं बोलता, चलता किन्तु अचल योगी॥
देखे तो भी नहीं देखता, क्योंकि निज का ध्यान रहा।
राग, द्वेष तज क्रिया पाप जो, निज ध्याये आराम रहा॥

42. आत्म ध्यान में लीन साधु जो, क्या है? कैसा? किसका है?
किस कारण से और कहाँ है ? इसमें ना मन जिसका है॥
निज शरीर भी न जाने फिर, अन्य पदार्थ कहाँ जाने।
ना विशेष जाने विषयों को, चेतन में रमना जाने।।

43. जो प्राणी जिस थल पर रहता, वह प्राणी उस थल पर ही।
करे प्रेम वा रमे जहाँ पर, ध्यान करे उस थल पर ही॥
ऐसे थल को छोड़ जीव वह, अन्य जगह न जाता है।
क्योंकि अपने कार्य योग्य वह, अन्य स्थल नहि भाता है॥

44. शरीरादि के विशेषणों में, जो अनजानी बनता है।
नहीं ध्यान उन विषयों का तब, नहीं कर्म वह बँधता है॥
ऐसा प्राणी कर्म बन्ध से, छूटे निश्चित भवि जानो।
शिव पद में फिर सदा काल ही, सुख में रमता है जानो॥

45. अन्य वस्तु वह अन्य रही है, अन्य वस्तु से दुख होता।
तथा आत्मा निज का ही है, जिससे हमको सुख होता॥
इसी हेतु उन महान पुरुषों-ने निज को पुरुषार्थ किया।
निज में ही फिर निज को पाया, शिव पाने भव सार्थ किया॥

46. जो मूरख बहिरातम, पुद्‌गल-द्रव्यों का स्वागत करता।
ना छोड़ें वे कदापि पुद्‌गल, चारों गतियों में भ्रमता॥
निजी स्वार्थ हेतु जग द्रव्यों, को रस जिसके युत आता।
उसका साथ शीघ्र ना तजता, वह, ऐसा आगम गाता॥

47. जो व्यवहार चरित से बाहर, ठहरे, निज में लीन रहें।
आत्म-ध्यान से अपूर्व सुख पा, ऐसे मुनि स्वाधीन रहें॥
क्रिया चले तब व्यवहारी यति, नहीं आत्म का ध्यानी हो।
क्रिया छोड़ता, निश्चय में जा, मुनि निज अमृत पानी हो॥

48. आत्मध्यान का महानन्द वह, सदा बहुत विधि ईंधन को।
यथा जलाता तथा बाह्य दुख, परिषहादि जग क्रन्दन को॥
सहता समता सह वह योगी, आत्म ध्यान में रत रहता।
मोक्ष सौख्य का पुरुषार्थी वह, शिव पाता जिनमत कहता॥

49. जग अज्ञान तिमिर की नाशक, परम आत्म की ज्योति महान।
महत् ज्ञानमय रूप कही है, मोक्षार्थी को सुख की खान॥
मुमुक्षुजन वे उसी ज्योति के, विषयक पूछें तत्त्व सदा।
पाने ज्योति व जिसे देखने, प्रयत्न शील निज रक्त सदा॥

50. जीव अलग है पुद्गल भी वह, निज-चेतन से विलग रहा।
यही तत्त्व का सार कहा है, जाने भवि जो सजग रहा॥
इसके आगे जो कुछ वर्णन, धर्म विषय का करते हैं।
चेतन और अचेतन का ही, विस्तृत वर्णन करते हैं॥

51. भव्य बुद्धि इष्टोपदेश को, विधिवत् जो अध्ययन करते।
निज आतम के श्रेष्ठ ज्ञान से, मान-अपमान हैं तजते॥
हठ-आग्रह तज, ग्राम, वनों में, शुक्ल ध्यान को ध्याते हैं।
''आर्जव'' बन वसुकर्म नाशकर, बने सिद्ध शिव पाते हैं॥

52. इष्टोपदेश आचार्य ये, पूज्यपाद का जान ।
अध्यातम भण्डार का, देता सम्यग्ज्ञान ॥ 52॥

प्रशस्ति

53. श्रुत पञ्चमी पर्व पर, पूर्ण हुआ अनुवाद।
नगर ''अमरपाटन'' जहाँ, मिला ज्ञान का स्वाद ॥ 53॥

54. ग्यारह दिन में शास्त्र यह, पूर्ण हुआ शुभ योग।
पच्चिस सौ तेतीस ये, वीर मोक्ष का योग॥ 54॥

55 जो भविजन मन योग से, पढ़ते यह उपदेश।
'आर्जव' बन सुखधाम हों, शिव जा आत्मप्रदेश ॥55॥

''सम्पूर्ण''

सप्त व्यसन नित पाप हैं, दुगर्ति के हैं ताज।
पूजन, श्रुत का हो व्यसन, शिव सुख के नितकाज॥
-आ. आर्जवसागर

हम कितने शाकाहारी ???

गतांक से आगे....

संकलन-प्रीतेश जैन

सावधान ! कोल्डड्रिंक्स यानि जहर ही जहर

(दैनिक हिन्दुस्तान, देहरादून 1 अगस्त 2012 का समाचार- ''खून में जहर घोलती है सॉफ्ट ड्रिंक्स'')

नाम बड़े ←→	दर्शन छोटे ←→	फल बड़े खोटे
(कं. ब्राण्ड)	(कोक, पेप्सी में पाए जाने वाले जहर)	(वैज्ञानिकों ने बताया जहर)
पेप्सी कोला	1. कीटनाकशक	1. शरीर को भारी नुकसानकर्ता
पेप्सी कैफेचिनो	2. क्लोरोपाईरीफास	2. लकवा (पैरेलिसिस),
माउंटेन ड्यू		गुर्दे, लीवर, हृदय का घातक
मिरांडा ओरेंज	3. लिडेन	3. तंत्रिका तंत्र (नर्वस सिस्टम)
मिरांडा लेमन		का नाशक, कैंसरकारी
ड्यूक लेमोनेड	4. हेप्टाक्लोर	4. यकृत (लीवर) नाशक
7 अप	5. मेलाथियान	5. श्वसन तंत्र (रेसप्रेटरी सिस्टम)
		बुरी तरह प्रभावित कर्ता
कोका कोला	6. डी.डी.टी. पावडर	6. मस्तिष्क को हानिदाता
	7. साइट्रिक एसिड E-330	7. अम्लपित्त, सेल्स हानि, केंसर कर्ता
थम्स अप	8. कैफीन	8. नशा की आदत, अनिद्रा, बैचेनी कर्ता
लिम्का	9. SSL फेम पोटेशियम	9. दांत सड़ाता, स्नायुतंत्र नाशक
	E-950	हृदय को बुरी तरह से खराब कर्ता
फैन्टा	10. कोकीन	10. नशा, उत्तेजना कर्ता
	11. पोटेशियम सॉरबेट	11. केंसर कारक
	12. फास्फोरिक एसिड E-338	12. हड्डियां गलाता, पेट में घाव करता है
	13. इथीलिन ग्लाइकोन	13. हृदय को नुकसान देता
	14. मिथाइल बैंजीन	14. किडनी खराब करता है
	15. एस्परटेम E-951	15. हृदय मूत्रनली में केंसर, सुस्ती, धुंधलापन, मधुमेह, सिरदर्द, जोड़ों में दर्द, चक्कर आना, नपुंसकता, अवसाद आदि कर्ता
	16. जिंक	16. त्वचा रोग कर्ता
	17. केडमियम	17. फेफड़े रोग कर्ता
	18. ब्रोमिनेटेड आयल	18. केंसरकारी
	19. मोनो सोडियम ग्लूटामेट	19. केंसरकारी (यूरोप में बेन)
	20. अल्कोहल (शराब)	20. नशा, बुद्धिनाश कर्ता
	21. मैथिल बेंजोइल	21. केंसरकारी
	22. एण्डोसल्फास	22. केंसरकारी
	23. कार्बनडाय ऑक्साइड	23. जो गैस बाहर करते हैं वो तरल रूप में अन्दर करने से मौत का खतरा
	24. सोडियम बेंजोएट E-211	24. D.N.A. को निष्क्रिय करता है, हाथ पैर कांपने लगते हैं

कोकाकोला-पेप्सीकोला की धोखाधड़ी :-

दोनों कम्पनियां अपने ब्राण्ड में क्या क्या पड़ा है कि पूर्ण जानकारी ब्राण्ड शीशी पर नहीं लिखती हैं। यदि सम्पूर्ण सामग्री लिख दी जाए तो कोई भी समझदार इन पेयों को पियेगा ही नहीं। क्योंकि सभी को अपना स्वास्थ्य प्राणों से प्रिय होता है। वैज्ञानिकों के शोध बताते हैं :-

● अमेरिका के मिशिगन विश्वविद्यालय के स्कूल ऑफ डेन्टीस्ट्री के प्रोफेसर फिलिप जे. का शोध बताता है कि ''एक बोतल कोल्ड ड्रिंक्स में 6 से 10 चम्मच चीनी होती है जो दांतों को सड़ाने के लिए पर्याप्त है।''

● डॉ. लुडबिग हावर्ड विश्वविद्यालय ने शोध में बताया कि कोल्ड ड्रिंक्स के सेवन से प्राकृतिक भूख लगने के तंत्र में अनियमितता आ जाती है व कृत्रिम तथा क्षणिक भूख का भ्रम होता है। (स्त्रोत : http.washingtonpost.com/wp-dyn/health)

● मेडिकल जनरल लेन्सेट ब्रिटिश का शोध 1980 के पृष्ठ 837-40 के अनुसार अधिकांश कोल्ड डिंक्स में एस्परटेम रसायन मिलाया जा रहा है जो मूत्र नलिका के केंसर के लिए जिम्मेदार है।

● प्रसिद्ध चिकित्सक एन.डब्ल्यू. वाकर ने अपनी बहुचर्चित पुस्तक 'वाटर केन अण्डर योर हेल्थ' में लिखा है कि यदि कोल्ड ड्रिंक्स का ज्यादा सेवन किया जाए (अर्थात लगातार किया जाए) तो यह सरेब्रल पाल्सी (मस्तिष्क संबंधी बीमारी) व अन्य दिमागी रोग पैदा कर सकता है। यह दिमागी तंत्रिकाओं को नष्ट कर सकता है।

(स्त्रोत : www.envirodocs.com/dengeroustrend.htm)

● इन्सुलिन के सहखोजी वैज्ञानिक चार्ल्स बेस्ट ने शोध में पाया कि ''इसके अत्यधिक उपयोग से बच्चों के लीवर में सिरोसिस नामक रोग हो जाता है।''

● अमेरिका के मार्ग पेंडरग्रास्ट ने अपने शोध में बताया है कि कोकाकोला में स्वास्थ्य को नुकसान पहुंचाने वाले अन्य रसायनों के साथ साथ शराब का भी इस्तेमाल होता है। पेंडरग्रास्ट ने अपनी पुस्तक- 'फार गॉड, कंट्री एंड कोकाकोला में बताया है कि कोकाकोला में कैफीन, वैनीला, फ्लेवरिंग, एफई कोको, साइट्रिक एसिड, नींबू रस, चीनी और पानी मिला होता है। ऐसे रसायनों से कार्बनडाय ऑक्साइड (कार्बोनेट वाटर), कैफीन, कोकीन, पोटेशियम बेन्जोएट और दूसरे जहरीले रसायन शरीर में पहुंचते हैं। इससे अमाशय व आंतड़ियों में घाव, हड्डियों का गलना, मोटापा, दांत गिरना, हृदय रोग, गुर्दे में पथरी और कैफीन का नशेड़ी बना देने जैसे रोग हो सकते हैं।

कोक और पेप्सी के फायदे :-

● शौचालय की सीट की करे सफाई। ● कार के कलईयुक्त बम्परों से जंग के दाग हटाये। ● कार बैटरी टरमिनलों पर जमा नमक साफ करे। ● जंग लगे पेंच को ढीला करे। ● कपड़ों से ग्रीस के दाग हटाये। ● कार के शीशों पर जमी गंदगी को साफ करे। ● जले हुए बर्तन साफ करे। ● टूटे हुए दांतों को 20 दिनों में गलाये। ● बालों की चिकनाहट हटाये। ● स्विमिंग पूल में लगी टाईल्स की गंदगी हटाये। ● बालों में लगे हुए डाई (कलर) को हटाये।

कोक और पेप्सी की किसानों के लिए खुशखबरी :-

मध्यप्रदेश के छिन्दवाड़ा जिले के एवं गुजरात के अहमदाबाद के किसानों ने फसलों में लगे कीड़ों पर कोल्डड्रिंक्स का छिड़काव किया तो सभी कीड़े नष्ट हो गए।

सीक्रेट फार्मूला ऑफ कोक :-

एक फेमस वेबसाइट **"www.killercoke.org"** पर ''सीक्रेट फार्मूला ऑफ कोक'' नामक वीडियो में बताया गया है कि कोका कोला में अल्कोहल (शराब), कोकीन, केरेमिल कलर (केंसर कारी), साइट्रिक एसिड, शुगर 40 ग्राम आदि पाया जाता है। सन् 2013 में इस वीडियो को निलाया कं. ने तैयार किया है। जिसे फ्रांस टी.वी. द्वारा जनहित में प्रसारित किया गया। यह जानकारी Youtube पर The Secret Formula of Cocacola एवं Killer coke hindi नाम से भी उपलब्ध है।

अमिताभ बच्चन ने पेप्सी - कोक का विज्ञापन बन्द क्यों किया जानिए रहस्य :-

सन् 2005 में अमिताभ बच्चन जी को उत्तरप्रदेश में एक कार्यक्रम के दौरान पेट में दर्द उठा, परिजन शीघ्र बाम्बे ले आए। बाम्बे हॉस्पिटल में विशेषज्ञ डॉक्टरों ने पेट का ऑपरेशन किया। बड़ी आंत का सड़ा हुआ भाग काटकर बाहर निकाल दिया। सड़े हुए भाग का अनुसंधान किया गया तो पता चला कि अमिताभ जी शराब, मांसाहार, सिगरेट, गुटका का सेवन नहीं करते हैं, किन्तु ये जिन जहरीले रसायनों से सड़ा है वो पेप्सी कोक के अन्दर पाये जाते हैं। अमिताभ जी को डॉक्टरों ने बताया कि ये आँत इस कारण से सड़ी है तब अमिताभ जी ने डॉक्टरों को कहा कि अब में कोल्ड ड्रिंक्स नहीं पिऊँगा। भारत स्वाभिमान आन्दोलन के प्रवक्ता राजीव दीक्षित की ई-मेल वार्ता अमिताभ जी से हुई। अमिताभ जी ने राजीव जी से कहा कि आप दुनिया को बताएँ कि मुझे कोल्डड्रिंक्स से हानि हुई है, इसलिए मैंने उन्हें पीना छोड़ दिया है।

कोक–पेप्सी मतलब ठण्डी मौत

(विश्वभर में प्रतिवर्ष सोफ्टड्रिंक्स से 1.80 लाख लोग मरते हैं।)

यवतमाल इंजीनियरिंग कॉलेज महाराष्ट्र में युवाओं के दो ग्रुप में पेप्सी/कोक बिना रुके अत्यधिक बोतल पीने की शर्त पर एक ग्रुप के युवा ने 10 बोतल, दूसरे ग्रुप के युवा ने 9 बोतल पेप्सी-कोक पीली और 10 मिनट के अन्दर ही बेहोश हो गए। बाद में अस्पताल में दोनो ने दम तोड़ दिया। इन्जीनियरिंग कॉलेज के युवाओं ने अन्य हजारों युवाओं के साथ मिलकर सचिन तेंदुलकर (क्रिकेटर) का बॉम्बे में धर घेर लिया। पुलिस ऑफिसर आदि ने तेंदुलकर से युवाओंकी मीटिंग कराई। युवाओं के प्रश्नों के जवाब में सचिन तेंदुलकर बोले - ''मुझे पेप्सी ने ब्राण्ड एम्बेसेडर बनाया है और मुझे नहीं पता कि इसमें क्या है, मैं इसको नहीं पीता, मुझे सूट नहीं करती, मैं विज्ञापन मात्र अपील करने के लिए करता हूँ।

इसी प्रकार दिल्ली यूनिवर्सिटी में युवाओं की टीम में शर्त लगी कि कौन सबसे अधिक कोकाकोला पी सकता है। जो विजेता बना उसके द्वारा 8 बोतल कोकाकोला पी गई और कुछ मिनिटों में उसकी मौत हो गई क्योंकि रक्त में कार्बनडाय ऑक्साइड की मात्रा अत्यधिक हो गई तथा ऑक्सीजन की भारी कमी हो गई थी। उसी समय प्रिंसिपल द्वारा यूनिवर्सिटी केन्टीन में कोल्ड ड्रिंक्स पर प्रतिबंध लगा दिया गया।

कुछ समय बाद अमिताभ बच्चन ने कहा

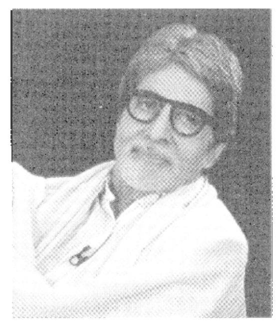

अहमदाबाद के प्रबन्ध संस्थान (IIM) के एक कार्यक्रम में हजारों श्रोतागण बैठे थे जिनमें प्रबन्ध संस्थान के विद्यार्थी, शिक्षक गण और गुजरात पर्यटन विभाग के अधिकारी थे। तब अमिताभ बच्चन ने ये बात बताई कि ''जयपुर की एक छोटी सी बच्ची ने जब मुझे कहा कि आप कोल्डड्रिंक का प्रचार क्यों करते हैं ? मेरे टीचर ने बताया है कि कोल्डड्रिंक में जहर होता है।

मैं उस मासूम बच्ची के प्रश्न का तत्काल जवाब नहीं दे पाया किन्तु कार्यक्रम से लौटने के पश्चात् विचार किया कि लोगों के मन में इस प्रकार के विचारों का प्रभाव है तब से मैंने पेप्सी का प्रचार छोड़ दिया''।

प्रबन्ध संस्थान (IIM) के विद्यार्थियों ने उनसे पूछा कि किसी भी ब्रान्ड का प्रचार करने से पूर्व आप कैसे निर्णय लेते हैं ? तब अमिताभ जी ने बताया ''मैं उस उत्पाद कि पूरी जानकारी करता हूँ कि वह कैसे और किससे बना है, उसके बाद ही प्रचार करता हूँ। मैं तम्बाकू या शराब का प्रचार नहीं करता क्योंकि मैं उनका सेवन नहीं करता। मैंने अपने बेटे अभिषेक एवं बहु ऐश्वर्या को भी ये बातें बतायी हैं यदि तुम्हें किसी उत्पाद का प्रचार करना है तो तुम्हें अपना जीवन इस प्रकार संचालित करना होगा कि ये अन्य लोगों के जीवन को प्रभावित नहीं करे''

चन्द्र भूषण

(उपमहानिदेशक, विज्ञान एवं पर्यावरण शोध केन्द्र)

कोक/पेप्सी – संदर्भ

शाश्वत धर्म	-	सितम्बर 2000	पाञ्चजन्य	-	अगस्त 2006
जिनेन्दु	-	अक्टूबर 2003	दैनिक जागरण	-	अगस्त 2006
दैनिक भास्कर	-	3-4 अगस्त 2006	हिन्दुस्तान टाइम्स	-	10 अगस्त 2006
राजस्थान पत्रिका	-	11 अप्रेल 2008	Eaternal Solutions	-	May 2007
www.mouthshot.com	-	30-5-2005	www.laleva.cc/food/pesticides_cocacola.html	-	30-5-2005
www.esdobd.org	-	30-5-2005	राजस्थान पत्रिका	-	अगस्त 2014

http://articles.economictimes indiatimes.com/2014-01-31/news/ 46870360-L-amitabh-bachch- pepsi-and-coca-cola-cola-brand.

आचार्यश्री सीमंधरसागर संस्तुति

1. कर्नाटक में बेलगाँव के, हलगे में था जन्म लिया।
साह मलप्पा पिता, मात उन-पद्मावती को धन्य किया॥
नाम 'जिनप्पा' पाकर गृह में, धार्मिक सुख में लगा सुमन।
सरल स्वभावी, समताधारी, सीमंधर आचार्य नमन॥

2. बाल ब्रह्मचारी रह करके, भव भोगों को त्याग दिया।
कार्तिक शुक्ला दोज सोम दिन, इस जग से मुख मोढ़ लिया॥
सन् उन्निस सौ त्रेपन में ही, देवरसिंगी किया गमन।
वीरसागराचार्य शरण पा, ब्रह्मचर्य में किया रमण॥
(सरलस्वभावी.......)

3. इन्हीं गुरु से क्षुल्लक पद धर, ऐलक पद भी तब पाया।
शांति, वीर की परम्परा के, सुपार्श्वसूरि को जब पाया॥
नगर जालना ऐलक पद ले, कुंथलगिरि जा किया नमन।
सुपार्श्व सूरि से सन् अंठावन, मुनि पद पर था किया गमन॥
(सरलस्वभावी.......)

4. चारितचक्री परम्परा में, सीमंधर विख्यात हुए।
सीमंधरसागर की छबिलख, अनेक भव्य भी साथ हुए॥
पावन प्रवचन, आचारों का, पालन इन्द्रिय किया दमन।
सुबाहुसागर, सु-सिद्धसागर, आदि संघ से सजे श्रमण॥
(सरलस्वभावी.......)

5. उन्निस सौ चौहत्तर सन् में, फाल्गुन शुक्ला एकम को।
विहार देश के त्रिलोकपुर में, पाया गुरु पद उत्तम को॥
चउविध संघ समक्ष आपको, महाचार्य पद मिला श्रमण।
शुभ मुहूर्त्त में जयकारों से, सबने गुरु को किया नमन॥
(सरलस्वभावी.......)

6. कई प्रान्तों में विहार करके, प्रकाश धर्म का फैलाया।
तीर्थक्षेत्र भी सर्व देखकर, जिन महिमा को दर्शाया॥
शिखर सम्मेद व ऊर्जयन्त के, किये अनेक हि शुभ दर्शन।
बहुत व्रतों व उपवासों से, किये आपने कर्मक्षपण॥
(सरलस्वभावी.......)

7. दीक्षा देकर शिष्य गणों का, अनुग्रह तुमने बहुत किया।
सुमति सु-सागर, नेमीसागर, दे दीक्षा हि साथ लिया॥
मल्लि सु-सागर, सिद्ध सु-सागर, इनको मुनिपद दिया परम।
सुशीलमति वा राजमति को, दिया आर्यिका नियम धरम॥
(सरलस्वभावी.......)

8. जीवन के नब्हे वर्षों में, सल्लेखन ली बारह वर्ष।
शक्कर, नमक रसों के त्यागी, निद्रा-विजयी तप में हर्ष॥
ऐसे सीमंधराचार्य को, पद प्रदान का आया मन।
विद्यासागर सूरि शिष्य वे,- आर्जवसागर भाये श्रमण॥
(सरलस्वभावी.......)

9. माघ शुक्ल षष्ठी के शुभ दिन, दो हजार पन्द्रह सन् में।
मध्य देश इंदौर नगर के, निकटोद्यान सु-परिसर में॥
चिर दीक्षित आर्जवसागर को, सूरि पद कीना अर्पण।
जयकारें भक्तों की गूंजी, कहते तव जीवन दर्पण॥
(सरलस्वभावी.......)

10. मुनिवर संघ व श्रावक जन को, सेवा भाग्य मिला सबको।
नवाचार्य आर्जवसागर ने, मार्गदर्श दीना जन को॥
फाल्गुन कृष्णा तृतिया को शुभ, दो हजार पंद्रह था सन्।
उपवासों सह सल्लेखन हुई, सीमंधर गये स्वर्गश्रमण॥
(सरलस्वभावी.......)

11. स्वर्गलोक से विदेह में जा, तीर्थंकर का दर्शन हो।
हम सबका भी नमन जहाँ पर,- पहुँचे, यह भव सुमरण हो॥
जयवन्तो जय, जयवन्तो जय, सर्व भक्त हैं करें नमन।
आर्जवमय इस मोक्षमार्ग से, जग प्रकाश मय होय चमन॥
(सरलस्वभावी.......)

-प्रस्तुति-आचार्य आर्जवसागर संघ

(समय-आ.सीमंधरसागर जी के प्रथम समाधि दिवस पर ता.25-2-2016 को बड़नगर (म.प्र.) के बड़े मंदिर में आ. आर्जवसागर जी महाराज के ससंघ सान्निध्य में प्रस्तुति का सुअवसर)

जग से पार उतरना है

–आचार्यश्री आर्जवसागर

लय – आओ बच्चों तुम्हें ....

1. महावीर के सन्देशों से, जग से पार उतरना है।
निज आतम में निश दिन हमको, वीतराग गुण भरना है॥
महावीर के ....। वंदे जिनवरं, ... वन्दे जिनवरं 2
2. महावीर की जिनवाणी में, आत्मविशुद्धि करना है।
कर्म–मैल को धोकर हमको, जिनवर सदृश बनना है॥
महावीर के ....। वंदे जिनवरं, ... वन्दे जिनवरं 2
3. मोक्ष–मार्ग में आकर हमको, रत्नत्रय को गहना है।
रत्नत्रय की महा ज्योति से, निज में प्रकाश भरना है॥
महावीर के ....। वंदे जिनवरं, ... वन्दे जिनवरं 2
4. संयम धारण करने हमको, सब पापों को तजना है।
मुनियों के सत्संग को पाकर, धर्म गुणों को धरना है॥
महावीर के ....। वंदे जिनवरं, ... वन्दे जिनवरं 2
5. अहिंसा, सत्य, अचौर्य महाव्रत, ब्रह्मचर्य को धरना है।
और परिग्रह त्यागी बनकर, दीक्षा धारण करना है॥
महावीर के ....। वंदे जिनवरं, ... वन्दे जिनवरं 2
6. मुनि बन करके ध्यान लगाकर, सामायिक को करना है।
सप्तम गुणस्थान से लेकर, शुद्धोपयोग धरना है॥
महावीर के ....। वंदे जिनवरं, ... वन्दे जिनवरं 2
7. क्षपकश्रेणि में घातिकर्म को, पूर्ण नाश वह करना है।
अरिहन्त अवस्था पाकर हमको, समवसरण से सजना है॥
महावीर के ....। वंदे जिनवरं, ... वन्दे जिनवरं 2
8. अन्तिम शुक्लध्यान से हमको, कर्म अघाति तजना है।
पूर्ण शुद्ध व सिद्ध बनें हम, मुक्ति सुपद को गहना है॥
महावीर के ....। वंदे जिनवरं, ... वन्दे जिनवरं 2

साभार आर्जव कविताएँ

छोटी-छोटी स्वतंत्रता की चाह

-श्वेता पापड़ीवाल (जैन), मुंबई

एक छोटे से बालक को जब उसकी माँ ज्यादा चॉकलेट खाने से मना करती है तो उस बच्चे को पसंद नहीं आता और उसे लगता है कि वो दिन कब आएगा जब उसे किसी से अनुमति नहीं लेनी पड़ेगी और वह खुद अपनी मर्जी के अनुसार जो चाहे वह खा सकेगा। बचपन में स्वतंत्रता का मतलब होता है अपनी पसंद की चीजें खाना, अपनी मर्जी से सोना, टीवी देखना, खेलना, पढ़ना, घूमना फिरना और वो सब काम करना जिसमें हमारे मन को कुछ समय के लिए खुशी मिले। लेकिन जैसे-जैसे समय गुजरता जाता है स्वतंत्रता की परिभाषा भी बदलती जाती है। और आज के इस आधुनिक युग में तो स्वतंत्रता के मायने ही बदल गये हैं। आज की युवा पीढ़ी को हर चीज में सवतंत्रता चाहिए जैसे, रिश्तों में, फैसलों में, परिवार में, व्यवहार में इत्यादि। किसी भी प्रकार की बंदिश किसी को भी पसंद नहीं आती। असली बंदिशें तो दूर की बात है, अगर कभी अपने किसी के लिए चिंता व्यक्त करी तो सामने वाले को दखलंदाजी लगती है, और आज कल दखलंदाजी भी एक तरह की रोक या बंदिश मानी जाती है।

सास अगर बहू से आम तौर पर पूछ ले कि वो कहाँ जा रही है, तो बहू को लगता है कि जैसे उसकी स्वतंत्रता में बाधा पड़ गयी हो। अगर जेठानी अपनी देवरानी को कोई काम करने का तरीका बता दे तो देवरानी को लगता है कि वह उसकी जिंदगी में पूरे समय दखलंदाजी करती है, और हर समय उस पर नजर रखती है। अगर पत्नी अपने पति के देर से आने का कारण पूछ ले, तो पति को लगता है कि वह हर समय उसके पीछे पड़ी रहती है। माँ बेटे से पूछ ले कि उसने खाना खाया या नहीं, तो बेटे को पसंद नहीं आता क्योंकि अब वह बड़ा हो गया है और अपना ध्यान रख सकता है। आज कल लड़कियों को अगर कोई उनके पहनावे के बारे में कोई सुझाव दे तो उन्हें लगता है कि उनके साथ ज्यादती हो रही है और उनपर पाबंदियाँ लगाई जा रही हैं। आज के आधुनिक जीवन ने हर किसी को आत्म निर्भर तो बना दिया है परंतु उसके साथ समझौता और सहन करने की ताकत छीन ली है।

एक ही परिवार में रहते हुए भी सभी को अपनी-अपनी स्वतंत्रता चाहिए जैसे सोने-उठने की, खाने-पीने की, कपड़े पहनने की, आने-जाने की और इन सभी के साथ किसी को कुछ न बताने की। कई लोग तो अगर शॉपिंग करके आते हैं तो वो पैकेट्स को भी छुपाकर अपने कमरे में ले जाते हैं, ताकि कोई देख ना ले। अक्सर स्वतंत्रता के नाम पर झूठ की नींव रखी जाती है। आजकल जो हर बेड रूप में टीवी होते हैं वह भी इस नई स्वतंत्रता की ही परिभाषा, क्योंकि परिवार के साथ बैठ कर टीवी देखने का मतलब है अपनी पसंद ना पसंद को नजर अंदाज करना, मतलब की अपनी बर्दाश्त करने की क्षमता को काफी बढ़ाना। लेकिन यह छोटी-छोटी स्वतंत्रता के सुख की चाह है क्योंकि हम निमंत्रण देते हैं कई बड़े-बड़े दु:खों और परेशानियों को। क्या इस स्वतंत्रता के वाकई में कोई दुष्प्रभाव हैं?

विहार-समाचार

परम पूज्य आचार्यश्री गुरुवर आर्जवसागरजी का ससंघ जनवरी 13 तारीख 2016 को बांसवाड़ा नगर के खान्दु कालानी में बाजे एवं जय-जयकार के साथ घर-घर के सामने पाद प्रक्षालन-आरती आदि करते हुए श्रावक गण की भारी संख्या के साथ भ. श्रेयांस नाथ मन्दिर में मंगल प्रवेश हुआ। प्रतिदिन प्रातः कालीन आचार्यश्री के प्रवचनों में बहुत संख्या में श्रद्धालुगण उपस्थित होते थे। दोपहर स्वाध्याय चलता था और शाम को पाठशाला में बच्चों के लिए शिक्षा दी जाती थी। गुरुवर के सरल भाषामय प्रवचनों से बहुत लोग आनन्दित हुए। जनवरी 25 तारीख को गुरुवर का प्रथम आचार्य पदारोहण दिवस मनाया गया जिसमें पं. अखिलेश शास्त्री के द्वारा दिये किये गये मंच संचालन में बांसवाड़ा की महिला मण्डल द्वारा मंगलाचरण पूर्वक कार्यक्रम की शुरुआत हुई। पश्चात् बाहर से पधारे अतिथियों द्वारा चित्र अनावरण एवं दीप प्रज्ज्वलन किया गया। पश्चात् क्षु. भगवतसागरजी ने अपना भाव व्यक्त किया। तत्पश्चात् आचार्य गुरुवर श्री आर्जवसागरजी के पादप्रक्षालन का सौभाग्य श्री अरविन्द भाई गांधी सूरत वालों को प्राप्त हुआ। शास्त्र भेंट का सौभाग्य श्री हर्षित भाई मेहता सूरत वालों ने प्राप्त किया और संघ में स्थित मुनिराजों एवं आर्यिकाओं को और क्षुल्लकजी को भी शास्त्र भेंट किये गये। तत्पश्चात् आचार्य गुरुवर आर्जवसागरजी की संगीत मय पूजन अष्ट द्रव्य से सजी हुई थालियों से भक्तिभाव पूर्वक सम्पन्न की गयी। तदुपरान्त आर्यिका प्रतिभामति माता जी ने आचार्य पद के बारे में बताते हुए अपनी श्रद्धा व्यक्त की। मुनिश्री भाग्यसागर जी ने भी अपने लिए ये मुनिपद कैसे मिला इसके बारे अपना भाव प्रकट किया। मुनिश्री नमितसागर जी ने भी विशाल रूप से आचार्य पद की व्याख्या करते हुए गुरुवर की महिमा बताई। मुनिश्री महानसागर जी ने आ.गुरुवर को आचार्य पद की सुयोग्यता के सम्बन्ध में बताते हुए उनके गुणों का बखान किया। पश्चात् आचार्यश्री आर्जवसागरजी ने गुरु की महिमा बतलाते हुए अपना मंगलमय उद्‌बोधन दिया। श्रावकों द्वारा गुरुवर की भाव विभोर पूर्वक मंगलमय आरती की गयी। इस प्रकार यह आचार्य पदारोहण दिवस मंगलमय हर्षोल्लास पूर्वक सम्पन्न हुआ।

तदुपरान्त कुछ दिन और ठहरने हेतु खान्दु कालानी समाज की ओर से बहुत निवेदन किये जाने पर भी 26 तारीख को आचार्यश्री का ससंघ विहार हो गया। और छोटी सरवन आदि गाँव होते हुए 1 फरवरी को मध्यप्रदेश में स्थित रतलाम नगर में बेन्ड-बाजे के साथ एवं बहुत संख्या में श्रावकों के जय-जयकार की ध्वनि गूंजते हुए नगर में मंगल प्रवेश हुआ। प्रातः प्रतिदिन गुरुवर का मंगल प्रवचन सम्यग्दर्शन के अष्ट अंग एवं जिनमन्दिर की विधि आदि विषयों पर हुआ। भक्तगण भी उत्साह पूर्वक प्रवचन का लाभ लेते थे। बांसवाड़ा से रतलाम तक के विहार में सूरत की महिलाओं एवं पुरुष वर्ग ने साथ में रहकर पुण्यार्जन किया। रतलाम नगर में करीब 15-16 दिन रहकर धर्मप्रभावना करके 17 फरवरी को आचार्यश्री का ससंघ विहार हो गया। बदनावर गाँव में कम संख्या में दिगम्बर जैन समाज होने के बाद भी बैण्ड-बाजे से गांव में आचार्यश्री का भव्य प्रवेश कराया और एक दिन ठहरकर फिर बड़नगर लोगों के मंगल निवेदन से वहीं की ओर विहार हुआ। फरवरी 21 तारीख को बड़नगर में बाजे के साथ, अपार जन समूह के साथ जयजयकार लगाते हुए नगर के अन्य मन्दिरों का भी दर्शन

कराते हुए भ. चन्द्रप्रभु जिनालय में प्रवेश हुआ। प्रतिदिन प्रात: कालीन मंगल प्रवचन चले। जिनमें गुरुवर ने निश्चय-व्यवहार, अनेकान्त, स्वभाव-विभाव, सच्चा सुख शान्ति कहाँ? देव शास्त्र गुरु का स्वरूप, नयी मूढ़तायें क्या? इत्यादि के विषयों पर प्रकाश डालते हुए भव्यों को सन्मार्ग दिखाया। पश्चात् वहाँ से विहार करके गौतमपुरा पधारे। दो दिन ठहरकर पश्चात् देपालपुर नगर में बाजे के साथ एवं श्रावकों के जय-जयकारों की ध्वनि के साथ नगर में प्रवेश हुआ। दोपहर में प्रवचन के माध्यम से धर्म प्रभावना की। पश्चात् वहाँ से आचार्यश्री ससंघ बनेडिया अतिशय क्षेत्र पहुँचे। वहाँ के मूलनायक भ.अजितनाथ जी के साथ अन्य पाँच वेदियों का भी दर्शन किया और 9-10 दिन ठहरकर रविवार में किये गये विधान के बीच प्रवचन का लाभ दिया। अन्तिम रविवार के प्रवचन के पूर्व शास्त्र भेंट करने का सौभाग्य श्री संजय सीमा जैन सह परिवार सागर वालों आदि ने प्राप्त किया। पश्चात् वहाँ से विहार करके अजनोद हासमपुरा गाँव से होते हुए आचार्यश्री का ससंघ उज्जैन नगर में पदार्पण हुआ। पहले जयसिंहपुरा के प्राचीन मन्दिर का दर्शन किया और वहाँ पर स्थित संग्रालय का भी अवलोकन किया। तत्पश्चात् जैन बोर्डिंग वालों के निवेदन से आचार्यश्री शान्तिनाथ दि. जैन मन्दिर में पधारे। यहाँ पर प्रात: फाल्गुन अष्टान्हिका पर्व में श्री सिद्धचक्र महामण्डल विधान तथा प्रवचन आदि के माध्यम से धर्म प्रभावना सम्पन्न हुई।

किसी को भगवान नहीं बनाया जा सकता

-आचार्यश्री आर्जवसागर

जैन गुरुदेव आर्जवसागर जी ने आज अपने प्रवचन के दौरान कहा कि किसी को भगवान नहीं बनाया जा सकता है। देव, शास्त्र और गुरु तो केवल परमात्मा बनने का मार्ग दिखा सकते हैं, किसी को परमात्मा नहीं बना सकते। उन्होंने कहा कि कर्म एवं विकारों ने हमारे भगवत् स्वरूप को ढंक रखा है। परमात्मा बनने के लिए ध्यान एवं तप के द्वारा कर्म के आवरण को हटाने से आत्मा का परमात्म स्वभाव प्रकट हो जाता है। कोई शिल्पी कभी पाषाण से भगवान की मूरत नहीं बनाता बल्कि, उस शिल्पी के मस्तिष्क पटल पर जो भगवान की मूरत अंकित होती है उसे ध्याता हुआ उस पाषाण से अनावश्यक पत्थर को काटता चला जाता है और वह मूरत प्रगट हो जाती है वैसे ही साधक साधु अपनी आत्मा से परमात्मा प्रगट करने के लिए अनावश्यक रूप जो कर्म आत्मा से बंधे हैं उन्हें तपस्या के माध्यम से हटाता चला जाता है और एक दिन सम्पूर्ण कर्मों की निर्जरा होने के उपरान्त उस आत्मा से परमात्मा प्रगट हो जाता है। जो शरीर सहित होता है वह सकल परमात्मा है और शरीर रहित वह निकल परमात्मा होता है। ऐसे परमात्मापने की शक्ति धारण करने वाले हमारे आस-पास के लोगों को वात्सल्य देकर, स्नेह देकर उन्हें धर्म में आगे बढ़ने के लिए उत्साहित करते रहना चाहिए। जो अपने आचरण में दोष लगा रहे हैं, उनकी निंदा न करके उन्हें एकांत में समझाकर, स्नेह देकर धर्म में स्थापित करना चाहिए। उन्होंने कहा कि धर्मी से प्रेम करना ही धर्म से प्रेम करना है। सच्चा गुणवान वही है, जो गुणवानों से ईर्ष्या न करके प्रमोद भाव धारण करता है।

साभार : आर्जव-वाणी

भाव विज्ञान जैन धर्म प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता

नियमावली :

1. उत्तर लिखने वाले या उसके पारिवारिक सदस्य की भाव विज्ञान पत्रिका संबंधी आजीवन सदस्यता होनी अनिवार्य है। एक परिवार से एक ही उत्तर पुस्तिका स्वीकार्य होगी । अन्य नहीं।
2. प्रश्न पत्र के पेपर पर ही उत्तर लिखकर भेजें । फोटो कॉपी मान्य नहीं होगी।
3. उत्तर पुस्तिका पर अंक देने का भाव उत्तर पुस्तिका में वर्णित उत्तरों की शुद्धता, लिखावट एवं उम्र पर निर्भर करेगा। अल्प उम्र वाले प्रतियोगी को प्रमुखता दी जावेगी।
4. उत्तर लिखकर काट दिये जाने पर या घिस दिये जाने पर अंक नहीं दिये जावेंगे।
5. उत्तर पुस्तिका की प्रतियोगी को एक फोटोकॉपी करवा लेना चाहिये क्योंकि मुख्य उत्तर पुस्तिका में कोई गलती न हो एवं अगली भाव विज्ञान पत्रिका में आने वाले उत्तरों का प्रतियोगी मिलान कर सके।
6. पत्रिका पहुँचने के पन्द्रह दिनों के भीतर उत्तर अवश्य प्रेषित करें। पत्रिका प्रकाशित होने के एक माह के बाद प्राप्त उत्तर पुस्तिकाएँ प्रतियोगिता हेतु मान्य नहीं की जावेगी।
7. पुरस्कार की राशि मनीआर्डर या बैंक आदि से भेजी जावेगी। प्रतियोगी प्राप्त मूल्य का उपयोग अपने तीर्थ वंदना, पूजा द्रव्य दान, आहार दान, औषधदान, उपकरण दान, पाठशाला की यूनिफार्म आदि धर्म कार्य के द्रव्य में सम्मिलित कर सकते हैं।
8. अगली भाव विज्ञान पत्रिका में सभी श्रेणियों के पुरस्कार विजेताओं के नाम प्रकाशित किये जावेंगे।
9. उत्तर पुस्तिका डाक/पोस्ट से निम्न पते पर प्रेषित की जानी चाहिए।
   डॉ. प्रोफेसर सुधीर जैन, 85, डी.के. कॉटेज, दानापानी रेस्टोरेंट के पास, ई-8 एक्सटेंशन, भोपाल (म.प्र.)

* **उपरोक्त प्रतियोगिता के बारे में हमारा उद्देश्य है कि बाल-युवा पीढ़ी भी स्वाध्याय के क्षेत्र में आगे बढ़े एवं घर-घर में चले धर्म संस्कार की पाठशाला।**

प्रथम पुरस्कार : 108 योग्य संख्यक मूल्य, द्वितीय पुरस्कार: 72 योग्य संख्यक मूल्य

तृतीय पुरस्कार : 57 योग्य संख्यक मूल्य

पुरस्कारों के पुण्यार्जक श्री विनोद कुमार जैन, 591, कंचन विला, कृष्ण विहार, वी.के. कोल नगर, (अजमेर राजस्थान)

उत्तीर्ण प्रतियोगी परिचय

दिसम्बर 2015

प्रथम श्रेणी

श्री सचिन वकीलचंद जैन
त्रिलोक मार्केट, नया बाजार, बड़ौत
बागपत(यू.पी.)

द्वितीय श्रेणी

श्रीमती कमला केसरीचंद जैन
शासकीय नर्सरी, नूतन नगर, खरगोन

तृतीय श्रेणी

श्री राहुल मुकेश जैन
4/115, मालवीय नगर, RHB
कॉलोनी जयपुर

उत्तर पुस्तिका दिसम्बर 2015

1. अच्युत स्वर्ग　2. 80 धनुष　3. श्रवण नक्षत्र
4. सिद्धार्थ नगर　5. हाँ　6. ना
7. ना　8. ना　9. 84 हजार
10. फाल्गुन कृष्ण एकादशी　11. धारणा
12. तीर्थंकर घातिया, अघातिया कर्मों को नष्ट करने के लिए पृथक्त्ववितर्क वीचार, एकत्ववितर्क अविचार, सूक्ष्मक्रियाप्रतिपाति, व्युपरतक्रियानिवृत्ति नामक शुक्ल ध्यानों को करते हैं।
13. नंद　14. कुन्थु　15. विमलप्रभा
16. मनोहर　17. सही　18. सही
19. गलत　20. सही

भाव विज्ञान जैन धर्म प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता

समय : 15 दिन, अंक : 100

- ❖ 20 प्रश्नों में से प्रत्येक प्रश्न पर 5-5 अंक समान हैं।
- ❖ इन प्रश्नों में से एक प्रश्न का उत्तर दो लाइनों में वाक्य सहित लिखना अनिवार्य है।
- ❖ उत्तर राष्ट्रभाषा हिन्दी में लिखें। लिखकर काटे या मिटाए जाने पर अंक नहीं दिए जाएँगे।

सही उत्तर पर (✓) सही का निशान लगावें-

प्र.1. चौबीसों तीर्थंकरों में प्रथम बाल ब्रह्मचारी तीर्थंकर कौन थे ?

भ.मल्लिनाथ ( )   भ.पार्श्वनाथ ( )   भ.वासुपूज्य ( )

प्र.2. भ. वासुपूज्य जी की आयु कितनी थी ?

60 लाख वर्ष ( )   72 लाख वर्ष ( )   30 लाख वर्ष ( )

प्र.3. भ. वासुपूज्य जी का वैराग्य का कारण क्या था ?

मेघ पटल नाश ( )   जातिस्मरण ( )   उल्कापात ( )

प्र.4. भ. वासुपूज्य जी की मोक्षकल्याणक तिथि क्या थी ?

भाद्र शुक्ला 14 ( )   श्रावण शुक्ला 15 ( )   भाद्र शुक्ला 8 ( )

हाँ या ना में उत्तर दीजिये-

प्र.5. भ. वासुपूज्य जी अपने माता-पिता के एक ही पुत्र थे। ( )

प्र.6. भ. वासुपूज्य जी का जन्म अयोध्या में हुआ था। ( )

प्र.7. भ. वासुपूज्य जी के समवशरण में प्रथम आर्यिका वरसेना थी। ( )

प्र.8. भ. वासुपूज्य जी के पिता का नाम वसुपूज्य जी था। ( )

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए:-

प्र.9. तीर्थंकरों को जन्म से ही .... ज्ञान होता है।

(अवधिज्ञान, श्रुतज्ञान, मन:पर्यय ज्ञान)

प्र.10. भ. वासुपूज्य जी दीक्षा के लिये .... वन में गये।

(सहेतुक वन, मनोहर उद्यान, जम्बु वन)

प्र.11. भ. वासुपूज्य जी के शरीर का वर्ण .... था।

(पीला, नीला, लाल)

दो पंक्तियों में उत्तर दें:-

प्र.12. भ. वासुपूज्यजी के गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान कल्याणक कौन-सी तिथि पर और कहाँ पर हुये ?

....

....

....

सही जोड़ी मिलायें:-

प्र.13. भ. वासुपूज्य जी के समवशरण का विस्तार - 66

प्र.14. भ. वासुपूज्य जी के साथ दीक्षा लेने वाले राजाओं की संख्या - $6\frac{1}{2}$ योजन

प्र.15. भ. वासुपूज्य जी के समवशरण में गणधरों की संख्या - 6000

प्र.16. भ. वासुपूज्य जी के समवशरण में केवल ज्ञानियों की संख्या - 676

सही (✓) या गलत (×) का चिन्ह बनाइये:-

प्र.17. भ. वासुपूज्य जी ने कदम्ब वृक्ष के नीचे केवलज्ञान प्राप्त किया। ( )

प्र.18. भ. वासुपूज्य जी ने आयु के 6 माह शेष रहने पर प्रतिमायोग धारण किया। ( )

प्र.19. भ. वासुपूज्य जी के साथ चौरानवे मुनि मुक्ति पद को प्राप्त हुये। ( )

प्र.20. भ. वासुपूज्य जी ने प्रात: काल के समय विशाख नक्षत्र में मोक्ष पद प्राप्त किया। ( )

आधार

1. उत्तर पुराण, 2. जैनागम संस्कार

प्रतियोगी-परिचय

भाव विज्ञान सदस्यता की रसीद क्रमांक :

नाम .... उम्र ....

पिता/माता/पति का नाम ....

नगर या गाँव का नाम ....

पता..

....

मोबाईल/फोन नं. ....

सदस्यों को भाव विज्ञान प्रेषित करते समय लिफाफे के पते पर रसीद क्रमांक का लेख भी किया जाता है।

भाव विज्ञान परिवार

✶✶✶✶✶शिरोमणी संरक्षक ✶✶✶✶✶

● **मेसर्स आर.के. ग्रुप, मदनगंज-किशनगढ़, अजमेर,** ● श्री जैन निर्मल कुमार झांझरी, डीमापुर (नागालैंड)

परम संरक्षक :● श्री जैन गौतम काला, राँची ● श्री बुधराज जैन कासलीवाल, पांडीचेरी

✶✶✶ पुण्यार्जक विशेषांक संरक्षक ✶✶✶

● प्रबंधकारिणी समिति, श्री १००८ पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिर, कीर्तिनगर, जयपुर ● सकल दिगम्बर जैन समाज, दाँतारामगढ़, जिला सीकर ● श्री कुन्थीलाल रमेशचंद नरेश कुमार जैन गदिया, नसीराबाद (अजमेर) ● **रामगंजमण्डी** : सकल दिगम्बर जैन समाज एवं वर्षायोग समिति 2011, श्री जैन ताराचंद मित्तल परिवार एवं महेशकुमार अशोक कुमार महेन्द्र कुमार जैन ठोरा।

✶✶ पुण्यार्जक संरक्षक ✶✶

● श्री जैन नीरज सुपुत्र श्रीमती चन्द्रकला पाटनी, रांची ● सुशील कुमार, अभिषेक रोहित कुमार जैन, पांडिचेरी ● श्री मिठ्ठनलाल जैन, नई दिल्ली

✶ सम्मानीय संरक्षक ✶

● श्री वर्धमान विक्रमादित्य जैन, चैन्नई ● श्री जैन पदमराज होळल, दावणगेरे ● श्री जैन सोहनलाल कासलीवाल, सेलम ● श्री जैन संजय सोगानी, राँची ● श्री जैन आकाश टोंग्या, भोपाल ● श्री महावीरप्रसाद संजयकुमार जैन, इस्पात एंटरप्राईजेस प्रा.लि., कलकत्ता ● श्रीमती जैन संगीता हरीश बजाज, टीकमगढ़ ● श्रीमती कमलाबाई अशोक जैन साहबजाज, अजमेर ● श्री जैन बी.एल. पचन्ना, बैंग्लुरू ● श्री घनश्याम जैन, कृष्णा नगर, दिल्ली ● **जयपुर** : श्री जैन कमलजी काला, कु. इन्द्रसेना जैन, ● **सूरत** : श्री नरेश जैन, (दिल्ली वाले), श्री जैन निलेश भाई शाह।

✶ संरक्षक ✶

● श्री जैन विजय अजमेरा, रीवा ● श्री के. सी. जैन, डि. एक्साइज अधिकारी, छतरपुर ● श्री अजित प्रसाद जैन सराफ, रेवाड़ी ● दिल्ली : श्री विजयपाल जैन, शाहदरा, श्री राकेश जैन, रोहिणी ● श्री दिगम्बर जैन तीर्थ बड़ा मंदिर, हस्तिनापुर (मेरठ) ● श्री संजय जैन, गुड़गांव ● श्रीमती सुषमा रवीन्द्र कुमार जैन, गाजियाबाद ● श्री जैन कल्याणमल झांझरी, कलकत्ता ● श्रीमती सुधा महेन्द्र कुमार जैन, भोपाल ● श्री कस्तूरचंद सुरेश कुमार जैन, रामगंज मण्डी, कोटा ● श्रीमती जैन हीरामणी चांदमल सेठी, गुवाहाटी ● श्री जैन विमलचंद मोहित कुमार ठोलिया, पांडीचेरी ● श्रीमति विमला मनोहर जैन, सूरत ● **जयपुर** : श्री एस.एल. जैन (बागड़िया), श्री जैन गुणसागर ठोलिया-किशनगढ़-रेनवाल, श्री जैन श्रेयांस कुमार पाटोदी, श्रीमती जैन अनिता पारस सौगानी, श्री जैन जितेन्द्र अजमेरा, श्री जैन ओम कासलीवाल, श्री जैन मंगलचंद हरकचंद मोतीलाल कमलचंद छाबड़ा, श्री विजय कुमार जैन छाबड़ा ● **उदयपुर** : श्री प्रकाशचंद जैन, श्रीमती निधी राहुल जैन-अनुपम ग्रुप ऑफ कम्पनीज, श्री जैन अशोक कुमार ड्वारा ● इंदौर : श्री सचिन जैन, स्मृति नगर

✶विशेष सदस्य ✶

● श्री भागचन्द जैन, नसीराबाद ● सूरत : श्री जैन हर्षद भाई मेहता, श्री जैन अरविंद भाई गांधी, श्री जैन संयम संदीप भाई शाह, श्री जैन रमेश मोहनलाल दौसी, श्री जैन कोठारी बाबूलाल कचरालाल, श्री जैन कन्हैयालाल कचरालाल मेहता, श्री जैन कमलेश शाह, श्री जैन हसमुख मगनलाल शाह, श्री जैन चम्पालाल लक्ष्मीलाल सिंघवी, श्री जैन नीलकेष बालू शाह-मढ़ी, श्रीमती जैन सुनिता विद्या प्रकाश दीवान, श्री जैन अशोक कुमार गंगवाल खाच्छरियावास, श्रीमती जैन गुणमाला देवी दीपचंद सेठी, हरदा : श्री जैन नीलेश अजमेरा, अहमदाबादः श्री जैन रमेशभाई जोइतालाल मेहता

नोट : हमारी भाव विज्ञान पत्रिका में विशेष सदस्यों तक आजीवन सदस्यों की सूची हमेशा प्रकाशित की जाती है, और विषय वस्तु से अतिरिक्त स्थान उपलब्ध होने पर नए तथा संपूर्ण सदस्यों की सूची भी प्रकाशित की जाती है।

✶नवागत सदस्य ✶

रतलामः श्री जैन ओमजी अग्रवाल, श्रीमती जैन मनोरमा सुरेन्द्र गांधी, डॉ. निर्मल जैन, **जैनवाड़ी** (सोलापुर): श्री जैन वृषभ खाणे; **परतापुरः** (बांसवाड़ा): श्री रमेशचंद जैन (हथियावत), श्री मेघावत तेजकरण जैन, श्री रजावत सुनील जैन, श्री जगीसोत राकेशकुमार जैन, श्री अशोक जैन बीकावट; **सागरः** पं. जैन अखिलेश शास्त्री 'रमगढ़ा'; **करमासदः** श्री जैन सम्यक कमल बी शाह

भाव विज्ञान पत्रिका की सदस्यता हेतु आवेदन-पत्र

मैं .... मधु (शहद), मांस, मद्य (नशा) का त्यागी, धर्म का अनुसरण करने वाला पिता/पति श्री ....

जिला .... प्रदेश ....से

भाव विज्ञान पत्रिका पुर्ण्याजक विशेषांक संरक्षक सदस्य रूपये 24500/- ☐ परम संरक्षक रुपये 21000/- ☐ पुण्यार्जक संरक्षक सदस्य रुपये 18,000/- ☐ सम्मानीय संरक्षक सदस्य रुपये 11,000/- ☐ संरक्षक सदस्य रुपये 5,100/- ☐ विशेष सदस्य रुपये 3,100/- ☐ आजीवन सदस्य रुपये 1,100/- ☐

राशि देकर आजीवन सदस्यता स्वीकार करता/ करती हूँ।

मेरा वर्तमान व्यवहारिक का पता :- ....

....

जिला .... प्रदेश ....

पिनकोड .... एस.टी.डी. कोड ....

फोन नम्बर .... मोबाईल ....

ई-मेल .... है।

दिनांक : हस्ताक्षर

कार्यालयीन उपयोग हेतु

श्री/श्रीमति .... पिता श्री .... को शिरोमणी संरक्षक/पुण्यार्जक विशेषांक संरक्षक/परम संरक्षक/पुण्यार्जक संरक्षक/सम्मानीय संरक्षक/संरक्षक/विशेष सदस्य/आजीवन सदस्यता क्रमांक ....प्रदान की जाती है।

दिनांक हस्ता. सम्पादक/प्रबन्ध सम्पादक

आशीर्वाद एवं प्रेरणा : संत शिरोमणी आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज से दीक्षित आचार्यश्री आर्जवसागर जी महाराज

पत्रिका की विशेषताएं एवं उद्देश्य :

☛ विशिष्ट साधक आचार्यों या साधुओं के और डाक्ट्रेट व विशिष्ट विद्वानों के शिक्षाप्रद आलेखों, प्रवचनों एवं समीक्षाओं का प्रस्तुतिकरण

☛ सत् साहित्य समीक्षा। ☛ अहिंसात्मक जीवन शैली। ☛ व्यसन मुक्ति अभियान।

☛ हिंसक पदार्थों व हिंसक सौंदर्य प्रसाधन का निरसन।

☛ नई पीढ़ी के लिए वैज्ञानिक शैली में जैन दर्शन का प्रस्तुतिकरण।

☛ रूढ़िवाद, मिथ्यात्व व शिथिलाचार रहित अनेकान्त, स्याद्वाद और सापेक्षवाद शैली में जैनत्व का प्रस्तुतिकरण।

☛ धार्मिक प्रश्नोत्तरी व काव्य संग्रह की प्रस्तुति।

☛ धार्मिक पर्व आयोजन व मुनि संघ समाचार प्रस्तुति इत्यादि।

नोट : ''भाव विज्ञान'' भोपाल के पक्ष में (ड्राफ्ट अथवा) स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, टी.टी. नगर, भोपाल में नेट/कोर बैंकिंग सुविधा के अंतर्गत सेविंग बैंक एकाउंट नंबर-63016576171 एवं IFS Code SBIN0030005 में नगद राशि सीधे जमा कर प्रकाशक को रसीद की छायाप्रति प्रेषित कर सदस्यता शुल्क की रसीद प्राप्त की जा सकती है।

सदस्यता आवेदन पत्र भेजन का पता

''भाव विज्ञान'' एम-8/4, गीतांजली काम्पलैक्स, कोटरा सुल्तानाबाद, भोपाल-462003 (म.प्र.) को प्रषित करें।

सम्पर्क : डॉ. अजित कुमार जैन - 09425601161, डॉ. सुधीर जैन - 09425011357

कृपया पत्रिका को पढ़कर अपने परिजन को दें या किसी दि. जैन मंदिर, वाचनालय अथवा किसी दि. जैन धर्म क्षेत्र पर विराजमान कर दें।

कृपया यहाँ से निकालें

जानिए - फास्ट फूड का रहस्य

चाहिये हो यदि तन-मन से स्वस्थ बच्चे
बचाओ 'फास्ट फूड' से, खिलाओ फूड अच्छे
विशेषज्ञों की सुनें, जो बता रहे हैं शोध
आप बच्चों के दुश्मन नहीं, माँ-बाप हैं अच्छे !!!

फास्टफूड की परिभाषा - डिब्बाबंद या रैपर पैकेट बंद खाद्य पदार्थ जो बाजार में बिक रहे हैं। जैसे मेगी, पिज्जा, बर्गर, फ्रेंच फ्राइज, चाउमीन, बिस्किट, चॉकलेट, बोर्नवीटा, कॉम्प्लान, होर्लिक्स, सेरेलेक्स, माइलो, चोकोज, प्रोटीनोज, बूस्ट, लेज, पेस्ट्री, कुरकुरे, कोल्ड ड्रिंक्स, च्युइंगम, फ्रूटी, माजा इत्यादि। इन्हें लम्बे समय तक सुरक्षित रखने के लिए जहरीले रसायनों का प्रयोग किया जाता है। जिनसे शरीर के नाजुक अंगों को धीरे-धीरे क्षति पहुंचती है। तब जीवन की गाड़ी चिकित्सकों के भरोसे घिसटने को हो जाती है मजबूर, उसे कहते हैं फास्ट फूड।

चेतावनी :- ● मधुमेह, किडनी फेल, आंखों की रोशनी जाना, हृदय घात, सफेद दाग, सफेद बाल, याददाश्त कमजोर होना, मोटापा, कैंसर आदि के लिए फास्ट फूड जिम्मेदार हैं।

- डॉ. एन.कोच पिल्लई
(अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान दिल्ली के इंडोक्रोइनोलॉजी के विभागाध्यक्ष)

● फास्ट फूड से भारत में बीमारियों की 70 फीसदी वृद्धि हुई है।

- डॉ. शिवा वन्दना (आहार विशेषज्ञ)

● छाती में धड़कन बढ़ना, दमा, लगातार सिरदर्द या कैंसर, याददाश्त कमजोर होना, स्वभाव चिड़चिड़ा, क्रोधी, पेट खराब रहना आदि रोगों का कारण फास्टफूड में मोनो सोडियम ग्लूटामेट (अजीनोमोटो) फ्लेवरिंग एजेन्ट (स्वाद को बढ़ाने वाला रसायन) है।

- डॉ. लुकमान अहमद खान (अणु जीव विज्ञानी)

● भारत में प्रयुक्त फास्ट फूड में डी.डी.ए., बी.एच.सी. तथा मेलाथियान जैसे घातक रसायनों की मात्रा मानव की सहन शक्ति से बाहर की बात है। फास्टफूड स्वास्थ्य को पूरी तरह चौपट कर रहे हैं।

- फूड टेक्नोलोजी रिसर्च इंस्टीट्यूट मैसूर, भारत

● यदि आहार संस्कृति नहीं सुधारी गई तो सन् 2018 तक दुनिया के सभी देशों में कैंसर व अन्य घातक रोगों से ग्रस्त लोगों की संख्या बहुत ज्यादा होगी।

- विश्व स्वास्थ्य संगठन, लंदन

रजि. क्रं. MPHIN/2007/27127

मक्सीजी मेले में श्रीजी के रथोत्सव में आचार्यश्री आर्जवसागरजी ससंघ।

मक्सीजी मेले में शोभा यात्रा के अवसर पर आचार्यश्री ससंघ।

मक्सीजी में शोभा यात्रा के उपरान्त श्रीजी का अभिषेक करते हुए भक्तगण।

टोंकखुर्द (देवास) में सोनकच्छ के भक्तगण आचार्यश्री से निवेदन करते हुए।

गंधर्वपुरी संग्रहालय प्रांगण का अवलोकन करते हुए आचार्यश्री ससंघ।

गंधर्वपुरी संग्रहालय के अन्दर स्थित प्रतिमाओं का अवलोकन करते हुए आचार्यश्री ससंघ।

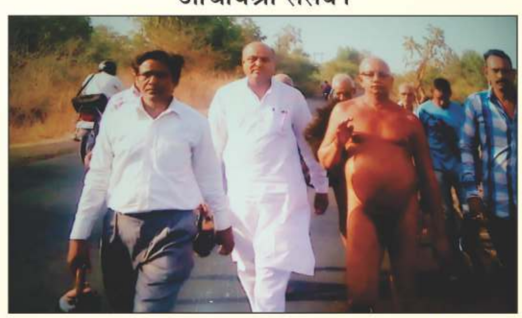

गंधर्वपुरी से सोनकच्छ की ओर विहार करते हुए।

स्वामी एवं प्रकाशक : श्रीमती सुषमा जैन द्वारा मुद्रक : पवन कुमार जैन द्वारा पारस प्रिन्टर्स, 207/4, सांईबाबा काम्पलेक्स, जोन-1, एम.पी. नगर, भोपाल से मुद्रित एवं एमआईजी-8/4, गीतांजली काम्पलेक्स, कोटरा सुल्तानाबाद, भोपाल (म.प्र.) से प्रकाशित।
सम्पादक - श्रीपाल जैन 'दिवा' एल-75, केशर कुंज, हर्षवर्धन नगर, भोपाल-3 (म.प्र.)